✿ श्रीसर्वेश्वरो जयति ✿

श्रीपुष्कराय नमः

श्रीब्रह्मणे नमः

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीपुष्करराज की चौरासी कोसीय

परिक्रमा–मार्गदर्शन

ज्येष्ठे ज्येष्ठा प्रयागस्य मध्यमे मध्यमा स्मृता ।
प्रदक्षिणं ततो गच्छेत् कनीयांसं विचक्षणः ।।
त्रिष्वप्येतेषु स्नायीत कुर्याच्चापि प्रदक्षिणम् ।
प्रयच्छति पितृभ्यो यस्तोयं तेषां तिलान्वितम् ।।
तेऽपि तुष्टाः पुनस्तस्य प्रयच्छन्त्यमित फलम् ।
यःस्नात्वा प्रयतो नित्यं ततः पश्येत् पितामहम् ।।
अनुलोमविलोमाभ्यां तथा व्यस्तसमस्तयोः ।
स्नातव्यं पुष्करे नित्यं ब्रह्मलोकमभीप्सता ।।
(पद्मपुराण सृष्टिखंड अ.-१८, श्लो. २३९-२४२)

प्रकाशक – अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज
विरचित—

॥ श्रीब्रह्मदेवाष्टकं स्तोत्रम् ॥

जगतः सृष्टिकर्तारं वेधसं कमलासनम् ।
कमण्डलुकराम्भोजं नमामि चतुराननम् ॥१॥

करमालं कृपाधाम ब्रह्मलोके सदा स्थितम् ।
इन्द्रादिसुरवृन्दैश्च समाराध्यं विधिं भजे ॥२॥

श्रीसनकादिकैः सेव्यं नारदेन सुरर्षिणा ।
नितरामर्चितं देवं नमामि परमेष्ठिनम् ॥३॥

तपसो वरदातारं विष्णुनाभिसमुद्भवम् ।
गन्धर्वकिन्नरैर्गीतं ब्रह्मदेवं सदा भजे ॥४॥

भूलोके पुष्करे रम्ये शोभितं हंसवाहनम् ।
गायत्र्या राजितं सार्द्धं श्रीविरञ्चिं समाश्रये ॥५॥

ऋषिमुनिबुधोपास्यं मुक्तामाल्यविभूषितम् ।
हेमकिरीटदिव्याभं प्रणमामि विधिं परम् ॥६॥

तीर्थविप्रैः श्रुतिग्रन्थै वर्णितञ्च स्मिताननम् ।
पौष्करसलिलस्नातं विधातारं विभावये ॥७॥

व्यधायि पुष्करे येन यज्ञकर्म हितावहम् ।
तं देवदेवदेवेशं लोकेशं प्रभजे शुभम् ॥८॥

ब्रह्मदेवाष्टकं स्तोत्रं ब्रह्मलोकप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥९॥

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीपुष्करराज की चौरासी कोसीय
परिक्रमा-मार्गदर्शन

संकलनकर्ता—

पं० श्रीलालचन्द करीठ (पुष्कर)

लेखक—

ज्योतिर्विद् पं० श्रीरामनिवास शास्त्री

श्रीसुरेश शास्त्री (पुष्कर)

प्रकाशक—

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

किशनगढ़, अजमेर [राजस्थान]

वि० सं० २०५७ श्रीनिम्बार्काब्द ५०९५

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), पुष्करक्षेत्र

किशनगढ़, अजमेर [राजस्थान]

पं० श्रीलालचन्दजी करीठ

(श्रीलाल महाराज)

छोटी बस्ती, पुष्कर

प्रथमावृत्ति—

एक हजार

मुद्रक—

श्रीनिम्बार्क – मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ [सलेमाबाद]

किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)

न्यौछावर—

दश रुपये मात्र

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥
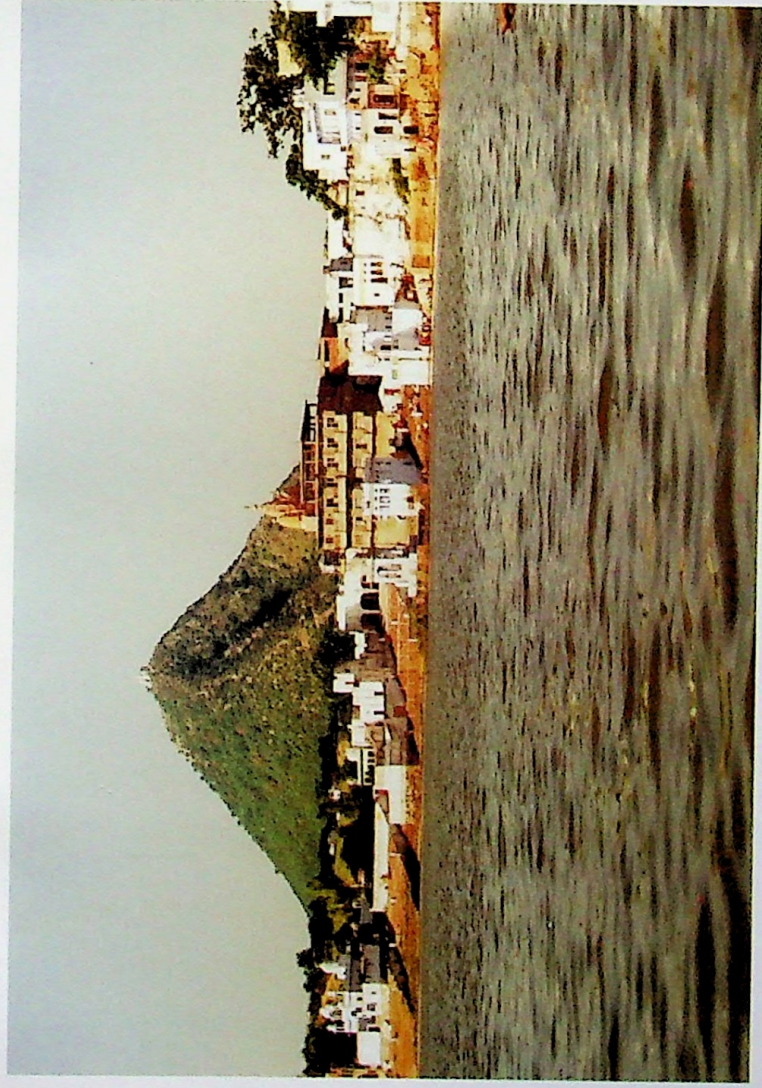
तीर्थगुरु श्रीपुष्कर का अनुपम दर्शन

युगादि तीर्थगुरु श्रीपुष्कर का पावन स्वरूप
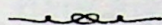
भारतवर्ष की परम सुरम्य पवित्रतम वसुधा पर अनेक भगवद्धाम एवं असंख्य पावनतमतीर्थ विद्यमान हैं। उन सभी भगवद्धामों और समस्त तीर्थों की महिमा पुराणादि शास्त्रों में सर्वाङ्गतया परिवर्णित है। उन समस्त तीर्थों में तीर्थगुरु पद पर सुशोभित युगादितीर्थ श्रीपुष्कर की दिव्यतम महिमा महाभारत पुराणादि शास्त्रों में उल्लिखित है किन्तु "पद्मपुराण" में जिस रूप में वर्णन हुआ है वह वस्तुत: बड़ा ही विस्तृत तथा अत्यन्त अद्भुत है। एक बार इस सम्पूर्ण सृष्टि के रचयिता पितामह श्रीब्रह्मा के मानस में एक सुन्दर यज्ञ करने की तीव्र उत्कण्ठा हुई तब उन्होंने समाधिस्थ होकर श्रीहरि चिन्तन पूर्वक निर्धारण किया कि मेरी उत्पत्ति भगवान् श्रीविष्णु के परम दिव्य नाभि-मण्डल कमल से हुई है अत: मुझे कमल अर्थात् पुष्कर के ही समाश्रित रहकर अपने अभीप्सित महायज्ञ को सम्पादित करना चाहिये।

श्रीब्रह्मदेव ने समग्ररूप से यही सोचकर इस भूतल पर जहाँ सर्वेश्वर श्रीहरि समय-समय पर—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥१॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥२॥

अपने इस दिव्य संकल्पानुसार भारत की सुरम्य पवित्र धरित्री पर अवतीर्ण होकर अनादि वैदिक सनातन धर्म का प्रतिष्ठापन एवं अधर्म का परिहार तथा श्रेष्ठ पुरुषों के संरक्षण के साथ दुरितजनों का विनाश करते हैं। ऐसी इस परम पावनतम वसुन्धरा पर ही यज्ञ करने का निश्चय श्रीब्रह्माजी ने किया और इसी उत्तम संकल्प को अपने हृदय में अवधारण कर जगत्स्रष्टा ने भूतल पर आकर इसी पुष्कर की सुरमणीय पुण्यमयी अवनि पर प्रवेश किया जहाँ नाग पर्वत की अनिर्वचनीय शोभा है। विविध मनोरम फल परिपूर्ण पादप पंक्तियों, नानाविध कुसुमित लतावलियों की अनुपम शोभा है। मयूर, कोकिल, शुक, सारिकादि खगवृन्दों की कमनीय निनाद–मधुरिमा, भृङ्गावलियों की अतीव मनोमुग्धकारी गुन्जार सभी को वरवश आकृष्ट किये हुए हैं। ऐसे इस पवित्रतम परम मनोभिराम स्थल का विलोकन कर श्रीब्रह्मदेव अतिपुलकायमान हो रहे थे।

पुष्कर के पावन लता–वृक्षों ने जगत्पिता श्रीब्रह्मा का अपने मधुर फलों सुवासित विकसित सुभग कुसुम–पुन्जों से सश्रद्ध स्वागत किया। श्रीब्रह्मा भी इनके स्वागत समादर से अति सन्तुष्ट हो उन्हें अपने अभिलषित वर प्राप्ति के लिये प्रेरित किया। इस पर पुलकित लता–पादप वृन्दों ने अपनी यही अभिकामना अभिव्यक्त की हे ब्रह्मदेव ! आप इसी उत्तम क्षेत्र को अपने अनवरत निवास से इसको अतिशय शोभायमान बना दें यही हमारा प्रणति पूर्वक वर प्राप्ति परक सश्रद्ध निवेदन है। श्रीब्रह्मा ने अति सन्तुष्ट हो उन्हें अपने यहाँ सतत निवास के सत्संकल्प से अगवत करा परम आश्वस्त किया।

सृष्टि रचयिता श्रीब्रह्मा ने कुछ ही कालान्तर में एक कमल (पुष्कर) पुष्प का प्रक्षेपण इस स्थल के धरातल पर किया

जिसके प्रक्षेपण–पातन से समस्त भूलक स्वर्गादिलोक प्रकम्पित हो उठे। फल स्वरूप इन्द्रादि देवगण भगवान् श्रीविष्णु की पावन सन्निधि में पहुँच कर इस प्रकम्प के रहस्य को जानना चाहा। श्रीहरि ने कहा देवो! व्याकुल होने की आवश्यकता नहीं हैं, इस धरातल के पाताल लोक में वज्रनाभ नामक प्रबल पराक्रमी दैत्यराज का महाविनाशकारी अत्यन्त उपद्रव है उसी के संहार के लिये श्रीब्रह्मा ने पुष्कर अर्थात् कमल का प्रक्षेपण किया है। सभी के मङ्गल हेतु ही यह कार्य हुआ है। यहाँ श्री ब्रह्मा ने जिस स्थान पर कमल (पुष्कर) निक्षेप किया है जिसके फलस्वरूप दैत्य संहार एवं इस क्षेत्र का कमल स्पर्श से परम पावनता का स्वरूप और भो अधिक अभिव्यक्त हुआ है। अतः आप समस्त सुरवृन्द निश्शंक निर्भय होकर के श्रीब्रह्माजी द्वारा अनुष्ठेय अतीव वृहद्रूपात्मक महायज्ञानुष्ठान में सम्मिलित हों और उसे विधिवत् सम्पन्न कराने में अपनी–अपनी सेवायें प्रस्तुत करें।

श्रीब्रह्माजी ने भो अपने इस पवित्र मनोरथ को सर्वाङ्ग परिपूर्ण करने के लिए यज्ञारम्भ का संकल्प किया। जगत्स्रष्टा को भार्या ब्रह्माणी श्रीसावित्री इस अवसर पर अपने उपस्थित होने में अति विलम्ब करने पर भारतवर्ष की ही एक आभीर गोप-कन्या को गायत्री नाम से सम्बाधित कर उसके साथ सविधि गान्धर्व विवाह सम्पन्न कर अपने यज्ञ का शुभारम्भ किया। जो दो सहस्र युग पर्यन्त निर्वाध गति से सङ्गोपाङ्ग सम्पादित हुआ। इस उपर्युक्त दिव्य–विवरण परक "पद्मपुराणोक्त ये अनुपम वचन मननोय हैं,—

ध्यायतिस्म परं देवं येनेदं निर्मितं जगत्।
ध्यायतो बुद्धिरुत्पन्ना कथं यज्ञं करोम्यहम् ।।१।।

कस्मिन्स्थाने मया यज्ञः कार्यः कुत्र धरातले ।
काशी-प्रयागस्तुङ्गा च नैमिषं शृङ्खलं तथा ॥२॥
काञ्ची भद्रा देविका च कुरुक्षेत्रं सरस्वती ।
प्रभासादीनि तीर्थानि पृथिव्यामिह मध्यतः ॥३॥
क्षेत्राणि पुण्यतीर्थानि सन्ति यानीह सर्वशः ।
मदादेशाच्च रुद्रेण कृतान्यन्यानि भूतले ॥४॥
यथाहं सर्वदेवेषु आदिदेवो व्यवस्थितः ।
तथा चैकं परं तीर्थमादिभूतं करोम्यहम् ॥५॥
अहं यत्र समुत्पन्नः पद्म तद्विष्णुनाभिजम् ।
पुष्करं प्रोच्यते तीर्थमृषिभिर्वेदपाठकैः ॥६॥
एवं चिन्तयस्तस्य ब्रह्मस्तु प्रजापतेः ।
मतिरेषा समुत्पन्ना व्रजाम्येषधरातले ॥७॥
प्राक् स्थानं स समासाद्य प्रविष्टस्तद्वनोत्तमम् ।
नानाद्रुमलताकीर्णनानापुष्पोपशोभितम् ॥८॥
तद्वनं नन्दनसमं मनोदृष्टिविवर्धनम् ।
पद्मयोनिस्तु भगवांस्तथा रूपं वनोत्तमम् ॥९॥
निवेद्य ब्रह्मणे भक्त्या मुमुचः पुष्पसम्पदः ।
पुष्पप्रतिग्रहं कृत्वा पादपानां पितामहः ॥१०॥
वरं वृणीध्वं भद्रं वः पादपानित्युवाच सः ।
एवमुक्ता भगवता तरवो निरवग्रहाः ॥११॥
ऊचुः प्राञ्जलयः सर्वे नमस्कृत्वा विरिंचिनम् ।
वरं ददासि चेद्देव प्रपन्नजनवत्सल ॥१२॥
इहैव भगवन्नित्यं वने सन्निहितो भव ।
एष नः परमः कामः पितामह नमोऽस्तु ते ॥१३॥
उत्तमः सर्वक्षेत्राणां पुण्यमेतद्भविष्यति ।
नित्यं पुष्पफलोपेता नित्यं सुस्थिरयौवनाः ॥१४॥
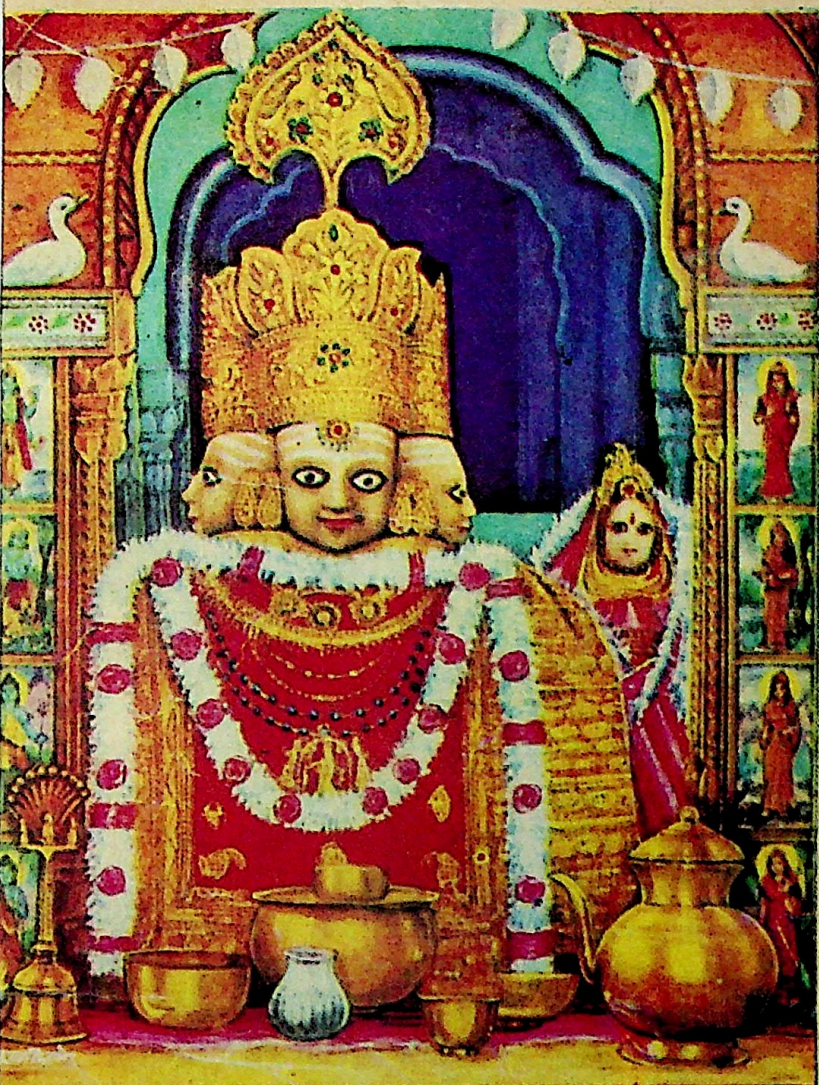
श्री ब्रह्मा जीकी झांकी

कामगाः कामरूपाश्च कामरूपफलप्रदाः ।
कामसंदर्शनाः पुंसां तपःसिद्ध्युज्ज्वलानृणाम् ।।१५।।
श्रिया परमया युक्ता मत्प्रसादाद्भविष्यथ ।
एवं स वरदो ब्रह्मा अनुजग्राहपादपान् ।।१६।।
स्थित्वा वर्षसहस्रं तु पुष्करं प्राक्षिपद्भुवि ।
क्षितिर्निपतिता तेन व्यकम्पत रसातलम् ।।१७।।
बभूव व्याकुलं सर्वं त्रैलोक्यं च चराचरम् ।
सुरासुराणां सर्वेषां शरीराणि मनांसि च ।।१८।।
तावद्विष्णुर्गतस्तत्र यत्र देवा व्यवस्थिताः ।
प्रणिपत्य इदं वाक्यमुक्तवन्तो दिवौकसः ।।१९।।
किमेतद्भगवन्ब्रूहि निमित्तोत्पातदर्शनम् ।
त्रैलोक्यं कम्पितं येन संयुक्तं कालधर्मणा ।।२०।।
एवमुक्तोऽब्रवीद्विष्णुः परमेणानुभावितः ।
माभैष्टमरुतः सर्वे शृणुध्वं चाऽत्र कारणम् ।।२१।।
निश्चयेनानुविज्ञाय वक्ष्याम्येषयथाविधम् ।
पद्महस्तो हि भगवान्ब्रह्मा लोकपितामहः ।।२२।।
भूप्रदेशे पुण्यराशौ यज्ञकर्तुं व्यवस्थितः ।
अवरोहे पर्वतानां वने चातीवशोभने ।।२३।।
कमलं तस्य हस्तात्तु पतितं धरणीतले ।
तस्य शब्दो महानेष येन यूयं प्रकम्पिताः ।।२४।।
आराध्यमानो भगवान्प्रदास्यति वरान्वरान् ।
इत्युक्त्वा भगवान्विष्णुः सह तदैव दानवैः ।।२५।।
जगाम तद्वनोद्देशं यत्रास्ते स तु कञ्जजः ।
प्रहृष्टास्तुष्टकोकिलालापलापिताः ।।२६।।
युष्मद्धितार्थमेतद्वै पद्मं विनिहितं मया ।
देवतानां च रक्षार्थं श्रूयतामत्रकारणम् ।।२७।।

असुरो व्रजनाभोऽय बालजीवापहारक: ।
अवस्थितस्त्ववष्टभ्य रसातलतलाश्रयम् ।।२८।।
युष्मद्धितार्थपापोऽसौ मया मन्त्रेण घातित: ।
प्राप्त: पुण्यकृतां लोकान्कमलस्यास्य दर्शनात् ।।२६।।
ब्रह्मणा पूजिता: सर्वे प्रणिपातपुर:सरम् ।
अनुग्राहो भवद्भिस्तु सर्वैरस्मिन्क्रताविह ।।३०।।
सुसत्कृता च पत्नी सा सावित्री च वरानना ।
अध्वर्युणा समाहूता एहि देवि त्वरान्विता ।।३१।।
उथिताश्चाग्नय: सर्वे दीक्षाकाल उपागत: ।
व्यग्रा सा कार्यकरणे स्त्रीस्वभावेन नागता ।।३२।।
एवमुक्तस्तदा ब्रह्मा किञ्चित्कोपसमन्वित: ।
पत्नीं चान्यां मदर्थे वै शीघ्रं शक्र इहानय ।।३३।।
यथा प्रवर्तते यज्ञ: कालहीनो न जायते ।
तथा शीघ्रं विधत्स्त्वं नारीं कांचिदुपानय ।।३४।।
एवमुक्तस्तदा शक्रो गत्वा सर्वधरातलम् ।
स्त्रियो दृष्टास्तु यास्तेन सर्वास्तास्सपरिग्रहा: ।।३५।।
आभीरकन्या रूपाढ्या सुनासा चारुलोचना ।
न देवी नच गन्धर्वी नासुरी नच पन्नगी ।।३६।।
नचाऽस्ति तादृशी कन्या यादृशी सा वराङ्गना ।
ददर्श तां सुवर्चाङ्गीं श्रियं देवीमिवापराम् ।।३७।।
एवमुक्तस्तदा शक्रो गृहीत्वा तां करे दृढम् ।
अनयत्तां विशालाक्षीं यत्र ब्रह्मा व्यवस्थित: ।।३८।।
आनीतासि विशालाक्षि माशुचो वरवर्णिनि ।
गोपकन्या च तं दृष्ट्वा गौरवर्णमहाद्युतिम् ।।३९।।
एवं चिन्ता पराधीना यावत्सा गोपकन्यका ।
तावद्ब्रह्मा हरिं प्राह यज्ञार्थं सत्वरं वच: ।।४०।।

देवी चैषा महाभाग गायत्री नामतः प्रभो ! ।
एवमुक्ते तदा विष्णुर्ब्रह्माणं प्रोक्तवानिदम् ।।४१।।
अमुं गृहाण देवाद्य अस्याः पाणिमनाकुलम् ।
गान्धर्वेण विवाहेन उपयेमे पितामहः ।।४२।।
तामवाप्य तदा ब्रह्मा जगादाध्वर्युसत्तमम् ।
कृता पत्नी महा ह्येषा सदने मे निवेशय ।।४३।।
प्रारब्धं च ततो होत्रं ब्राह्मणै र्वेदपारगैः ।
भृगुणा सहितैः कर्म वेदोक्तं तै कृतं तदा ।
तथा युगसहस्रं तु स यज्ञः पुष्करेऽभवत् ।।४४।।

युगादि तीर्थगुरु श्रीपुष्कर की पावनता महत्ता एवं जो अनिर्वचनीय दिव्यतम स्वरूप है, वह समस्त तीर्थ समूह से अत्यधिक महत्वशाली है। श्रीब्रह्माजी ने अपने यज्ञ को पूर्ण करके यहाँ भूतल पर अपने एक दिव्य स्वरूप से पुष्कर के अति सुरम्य तटीय भाग पर सर्वदा विराजित रहने का उपक्रम किया। पुष्कर तीर्थ तीन स्वरूपों में विभक्त है, ब्रह्म–पुष्कर, मध्य-पुष्कर, कनिष्ठ अर्थात् वृद्ध–पुष्कर, ये तीनों ही पवित्र सरोवर के रूप में अनन्त-अनन्त प्राणियों का निरन्तर मङ्गल करते हैं।

ज्येष्ठं तु प्रथमं यच्च तीर्थ–त्रैलोक्यपावनम् ।
ख्यातं तद् ब्रह्मदैवत्यं मध्यमं वैष्णवं तथा ।।१।।
कनिष्ठं रुद्रदैवत्यं ब्रह्मा पूर्वमकारयत् ।
आद्यमेतत्परं क्षेत्रं गुह्यं वेदेषु पठ्यते ।।२।।
अरण्यं पुष्कराख्यं तु ब्रह्मा सन्निहितः प्रभुः ।
अनुग्रहार्थं विप्राणां सर्वेषां भूमिचारिणाम् ।।३।।

पुष्कर में जगन्निर्माता श्रीब्रह्मा के अतिरिक्त भगवान् श्री वाराह भी सतत निवास करते हैं। पुष्कर के इसी भाग से श्री वाराह भगवान् ने पृथ्वी को समुद्र से लाकर भूलोक को यथावत्

अवस्थित किया। पुष्कर एवं पुष्कर के क्षेत्र में अनेक परम पुनीत तीर्थ अपनी अनुपम शोभा से चतुर्दिक् प्रान्त को उल्लसित किये हुए हैं। महर्षि श्रीअगस्त्य, ऋषीश्वर श्रीविश्वामित्र, अति प्राचीन वैदिककाल के श्रीवामदेव ऋषिवर आदि विशिष्ट ऋषि-मुनियों ने यहीं पर अपनी तपःसाधना की है जिसके प्रतीक स्वरूप उनकी भव्य गुफायें कन्धरायें आज भी विद्यमान हैं। भगवान् श्रीराम, भगवान् श्रीकृष्ण ने भी यहाँ पधार कर आचमन, मार्जन, स्नान, दान से अद्भुत आनन्द का अनुभव किया। भगवान् श्री कृष्ण ने हंसावतार के रूप में यहीं प्रकट होकर श्रीब्रह्मा के मानस पुत्र महर्षिवर्य सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमारों के गूढ़तम प्रश्न का समाधान किया था। देवर्षिवर्य श्रीनारदजी ने तो श्री ब्रह्मदेव के यज्ञ को सफल करने में स्वयं तत्पर रहे। महाराज भरत के आविर्भाव का पूर्व प्रतीक श्रीपुष्कर ही है। जिन भरत के नाम से भारतवर्ष विख्यात हुआ। सन्त-मनीषीगणों का भी यह उत्तम क्षत्र प्रख्यात है। यहाँ के विभिन्न भगवद्देवालय अति दर्शनीय है। माता सावित्री का दिव्य मन्दिर नाग पर्वत के उच्चतम शिखर पर अतीत के इतिहास का स्मरण कराते हुए दर्शक भावुकों को आनन्दानुभूति करा रहा है। माता सावित्री जो ब्रह्माजी की परम प्रियतमा भार्या थी। इनकी अनुपस्थिति में श्रीब्रह्मदेव कृत यज्ञ में गोपकन्या सावित्री से श्रीब्रह्मा ने गान्धर्व विवाह सम्बन्ध करके गायत्री माता को असन्तुष्ट कर दिया। जिसके फलस्वरूप श्रीगायत्री न विविध रूप से अतिकुपित होकर उन्हें अभिशाप दे दिया। भगवान् श्रीविष्णु ने श्रीसावित्री का १०८ स्थानों पर समस्त मङ्गलप्रदा भगवदीय मातृ समूह में उन्हें पावन स्थान प्रदान कर सन्तुष्ट किया। इसी प्रकार पापमोचिनी देवी का भी उच्च पर्वतीय भाग पर भव्य मन्दिर भी भक्तों का

चित्ताकर्षक स्थल है। श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य परम्परावर्ती अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का ब्रह्मघाट निकटवर्ती श्रीपरशुरामद्वारा स्थान अतीव प्राचीन और भव्य रूप से अपने सुयश से सबको उल्लसित किये हुए है। इसी पुनीत स्थल पर ही भक्तिमती श्रीमीराबाई के आराध्यदेव श्रीगिरिधरगोपालजी यहाँ विराजित हैं। श्रीमीराबाई ने मन्त्रोपदेश एवं उक्त देवविग्रह इन्हीं आचार्यवर्य से प्राप्त कर सम्पूर्ण विश्व में भक्तिगङ्गा की अजस्र धारा प्रवाहित की।

पुष्कर समस्त तीर्थों के गुरु स्वरूप में सुशोभित हैं। कार्तिक शुक्ल देवोत्थापिनी एकादशी से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा पर्यन्त पञ्च दिवस की पवित्रतम अवधि में इस भूतल के यावन्मात्र समग्र तीर्थ यहीं पर निवास करते हैं। इन पाँच दिनों में किये गये आचमन, मार्जन, स्नान, दान, पुण्य आदि का सामूहिक समस्त तीर्थों का सुफल यहीं पर प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार वैशाख शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक का भी यही विधान है। वस्तुतः —

कार्तिकीं वा वसेदेकां पुष्करे सममेव तु।
पुष्करे दुष्करो होमः पुष्करे दुष्करं तपः।
पुष्करे दुष्करं दानं वासश्चैव सुदुष्करः ॥१॥
ब्राह्मणो वेदविद्वांस्तु गत्वा वै ज्येष्ठपुष्करम्।
न वियोनिं व्रजन्त्येते स्नात्वा तीर्थे महात्मनः ॥२॥
कार्तिक्यां च विशेषेण योऽभिगच्छेत्तु पुष्करम्।
फलं तत्राक्षयं तस्य भवतीत्यनुशुश्रुम ॥३॥
सायं प्रातः स्मरेद्यस्तु पुष्कराणि कृताञ्जलिः।
उपस्पृष्टं भवेत्तेन सर्वतीर्थे तु कौरव ॥४॥

जन्मप्रभृति यत्पापं स्त्रियो वा पुरुषस्य वा ।
पुष्करे स्नानमात्रेण सर्वमेतत्प्रणश्यति ।।५।।
यथा सुराणां प्रवरः सर्वेषां तु पितामहः ।
तथैव पुष्करं तीर्थं तीर्थानामादि रुच्यते ।।६।।
तद्दृष्ट्वा दशवर्षाणि पुष्करे नियतःशुचिः ।
ऋतून्सर्वानवाप्नोति ब्रह्मलोकं स गच्छति ।।७।।

पुष्करतीर्थ में हवन, तप, दान, निवास आदि ये पवित्र कर्म वड़े ही दुर्लभ हैं। मुख्यतः कार्तिक मास में अथवा अन्य समय में भी ज्येष्ठ अर्थात् ब्रह्म पुष्कर में वेदज्ञ विद्वान् यहाँ आकर निवास करें, स्नान करें तो वे परम पद को प्राप्त करते हैं। उनको अक्षय फल की प्राप्ति होती है। प्रातः सायं पुष्कर तीर्थ का स्मरण करे, यहाँ सश्रद्ध स्नान करे तो जो भी पातक पुन्ज हों सभी समाप्त हो जाते हैं। जिस प्रकार देवताओं में श्रीब्रह्मा परम श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार समस्त तीर्थों में पुष्कर आदि तीर्थ एवं सर्वोपरि है। पवित्रता पूर्वक पुष्कर में यावज्जीवन किंवा दश वर्ष पर्यन्त हवनादि सत्कर्मानुष्ठान करने वाला उत्तम मेघावी पुरुष ब्रह्मलोक को उपलब्धि करता है।

इस प्रकार यह परम पावन तीर्थ युगादितीर्थ है यह समस्त कोटि-कोटि तीर्थों से अभिवन्दित तीर्थगुरु है। श्रीब्रह्मा अपने एक दिव्य स्वरूप से ब्रह्मलोक की भाँति यहाँ सर्वदा निवास करते हैं। अनेक ऋषि–मुनि–तपस्वी महापुरुष अज्ञातरूप में यहाँ सतत आराधना रत रहते हैं। नागपर्वत का अनुपम विहङ्गम स्वरूप इतना विलक्षण है, जहाँ विविध लता–पादपों का निर्झर प्रपातों का कन्दरा–गुहावों का शुक–पिक–सारिका–मयूर प्रभृति खग-वृन्दों के मधुर कलरवों का, भृङ्गों के कमनीय गुन्जार का, धेनु समूह मृगयूथ एवं मर्कटगणों को नानाविध मन्जुल क्रीडाओं का

जो अतीव चित्ताकर्षक परम मङ्गलकारी दर्शन करने का समवेत सङ्गम है वह वस्तुत: अवर्णनीय है। यों तो सदा ही यहाँ पर किन्तु विशेषत: कार्तिक मास में अनेकानेक सन्त–महात्माओं, महान्त–मठाधीशों, महामण्डलेश्वरों, धर्माचार्यप्रवरों महामनीषियों के अगणित श्रद्धालु भावुकजनों एवं अपार जनसमूह का अद्भुत यह सङ्गम भी एक अनिर्वचनीय छटा है। पर्वत श्रेणीयों के निम्न भाग में वालुका रेणु पुञ्ज के भव्य पर्वत तुल्य बने विशाल टीले अद्भुत शोभा के केन्द्र हैं। श्रीपुष्करराज के निर्मल अगाध जल में मत्स्य-ग्राह–कच्छपादि विविध जलचरों का सुन्दर निवास अति शोभा-प्रद है। तीर्थ पुरोहित समूह द्वारा पुष्करार्चन का दर्शन तथा समागत तीर्थ यात्रियों को उनके द्वारा शास्त्रोक्त विधिवत् अर्चन-वन्दनादि सत्कर्म सम्पादन का अवलोकन भी अति आदर्शमय है। अनेक दिव्य भव्य देवमन्दिरों, देव प्रतिष्ठानों, सत्सङ्ग स्थलों का, शिक्षा केन्द्रों का, शिक्षाविदों का पुष्कर पावन धाम है। कैसा भी अस्वस्थ मानव यहाँ के निवास, आचमन, मार्जन स्नान से, पवित्र वायु स्पर्श से, निर्मल जल से, स्वत: सुन्दर स्वस्थता प्राप्त कर सकता है। यहाँ के शास्त्रविहित अतिमधुर सङ्गीत श्रवण से सहज में रसानन्द की अप्रतिम अनुभूति होती है। यहाँ श्रीभगवन्नाम संकीर्तन की सरस ध्वनि से जन्मान्तरीय समस्त संकटों का परिहार एवं असीम आनन्द सुधारस पान करने का अवसर मिलता है। कितने ही स्थलों पर अन्न–क्षेत्रों के द्वारा यथेष्ठ पक्वान्न दान की व्यवस्था है। तीर्थ यात्रियों के निवास हेतु सुन्दर धर्मशालायें हैं। पुष्कर के चतुर्दिक् विशालतम दर्शनीय घाटों का दृश्य देखते ही बनता है। विस्तृत उद्यानों की हरीतिमा सभी को आकृष्ट किये हुए हैं। सुप्रभा, चन्द्रा, नन्दा–प्राची–सरस्वती का मञ्जुल जल प्रवाह पथिकों को, तीर्थ यात्रियों को पूर्ण तृप्ति प्रदान करते हैं।

वस्तुतः पुष्कर का स्वरूप उसका उज्ज्वल माहात्म्य अति-विलक्षण है। इसीलिये "पद्मपुराण" के ये वचन अवधार्य हैं—

नृलोके देवलोकस्य तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।
पुष्करं तीर्थमासाद्य देवदेवसमो भवेत् ॥१॥
अस्मिस्तीर्थे महाभाग! नित्यमेव पितामहः।
उवास परमप्रीतो देव-दानवसम्मतः ॥२॥
पुष्करेषु महाभाग-देवाः सर्षिपुरोगमाः।
सिद्धि परमिकां प्राप्ताः पुण्येन महताऽन्विताः ॥३॥
तत्राऽभिषेकं यः कुर्यात्पितृदेवार्चने रतः।
अश्वमेधाद्दशगुणं प्रवदन्ति मनीषिणः।
अप्येकं भोजयेद्विप्रं पुष्करारण्यमाश्रितः ॥४॥

मनुजलोक में त्रिभुवन प्रसिद्ध देवलोकस्थ यह सुरम्य तीर्थ श्रीपुष्करराज है जिसकी पावन सन्निधि पाकर मानव देवों के भी देव के ही देव तुल्य हो जाता है। हे महाभाग! इस पवित्र तीर्थ में पितामह श्रीब्रह्मा देववृन्दों एवं दानवों से सुसम्मत होकर यहाँ सर्वदा पुलकित मनस्क अवस्थित रहे हैं। हे महाभाग! इस तीर्थराज पुष्कर में ऋषियों सहित उन्हें अग्रभाग में करके देववृन्द दिव्य सिद्धि उपलब्ध कर परम पुण्य से लाभान्वित हुए हैं। इस तीर्थ-श्रेष्ठ श्रीपुष्कर में जो भी श्रद्धालु श्रीपुष्करराज का अभिषेक करता है वह अपने पितृजन एवं देववृन्द की पवित्र समर्चना में परम प्रीति रखने वाला महान् पुण्यशाली होता है सुधीप्रवर उसे अश्वमेध यज्ञ से दश गुणाधिक बताते हैं.।

श्रीहरि के चौबीस अवतारों में एक हंसावतार का भी वर्णन लोक विख्यात है और यह हंसावतार स्थल भी श्रीपुष्कर ही है क्योंकि अवतार जितने भी हुए हैं वे सभी भूतल पर भारत की पुण्य धरा पर ही हुए हैं। पुष्कर श्रीब्रह्मदेव का ब्रह्मलोक की

भाँति एक अपर अधिष्ठान है। वे एक स्वरूप से ब्रह्मलोक में तो वे अपने एक दिव्य स्वरूप से श्रीपुष्कर में अवस्थित हैं। अतः यहीं पर महर्षिवर्य सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमारों ने ब्रह्माजी से जो रहस्यात्मक प्रश्न किया और वे उसके समाधान में विचार मग्न हो श्रीहरि के स्मरण में समाधिस्थ हुए। परम कृपामय सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीब्रह्माजी के हँस वाहन के रूप में ही प्रकट होकर सनकादि महर्षियों के प्रश्न का जो समाधान किया उसका पावन स्थल पुष्कर ही है। इन्हीं श्रीहँसावतार का सूत्रात्मक अति संक्षिप्त उल्लेख इसी आलेख में पहले भी किया जा चुका है तथापि पुनः प्रसङ्गानुसार उसे स्पष्ट करने हेतु यह यहाँ पर वर्णित हुआ है। इन्हीं श्रीहंस भगवान् ने श्रीसनकादि महर्षियों को भक्तितत्त्व का वैष्णवता का जो दिव्योपदेश किया उसी का आगे चलकर श्रीसनकादिकों ने देवर्षिवर्य श्रीनारद जी को उपदेश किया और इसी भक्तितत्त्व एवं वैष्णवता का उपदेश श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् को श्रीनारदजी ने किया। श्रीनिम्बार्क भगवान् ने इसी उपदेश की अक्षुण्ण परम्परार्थ श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और इसी सम्प्रदाय की परम्परा में पुष्करक्षेत्रान्तर्गत निम्बार्कतीर्थस्थ सलेमाबाद में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विद्यमान है। जहाँ श्रीसनकादि संसेव्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर जो गुन्जाफल सूक्ष्म शालग्राम स्वरूप विराजते हैं। गीतगोविन्दकार संस्कृत रससिद्ध कवि श्रीजयदेव के परमाराध्य भगवान् श्रीराधामाधवजी भी यहीं पर सुशोभित हैं।

पुष्कर एवं पुष्करक्षेत्र में अनेक तीर्थ परम दर्शनीय हैं। नागपर्वत पर अगस्त्य गुफा, वामदेव गुफा, गोमुख, श्रीसावित्री माता, श्रीपापमोचिनी, पञ्च पाण्डव कुण्ड, श्रीवाराह विष्णु भगवान्, श्रीअटमटेश्वर महादेव, वृद्ध पुष्कर, मध्य पुष्कर, गया कुण्ड,

श्रीमृकण्ड आश्रम, श्रीकपिलाश्रम, श्रीपुलस्त्याश्रम, श्रीगङ्गा-यमुना वापी, अजयगन्धेश्वर महादेव, श्रीकालिका माता, पुष्करणी, सुप्रभा, चन्द्रा, नन्दा-प्राची-सरस्वती का संगम स्थल, श्रीअजयपाल, श्रीवैद्यनाथ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ, श्रीपिप्पलादतीर्थ, साभ्रमती आदि अनेक पावन तीर्थ सुशोभित हैं। कमल-कुसुमों से परिशोभित श्रीपुष्करराज का दिव्य स्वरूप परम रमणीय एवं अतीव पवित्रतम है। पुष्कर-परिक्रमा की असीम महिमा है। यह परिक्रमा पुष्कर सरोवर की एवं उसके २४ कोश क्षेत्रीय तथा ८४ कोश क्षेत्रीय की यदि विधिवत् की जाय तो उसका अनन्त फल प्राप्त होता है। प्रस्तुत ग्रन्थ परिक्रमा-विधि का ही पूर्ण द्योतक है। पुष्कर की परिक्रमा एवं उसके निवास मात्र से ही पुण्यों का सञ्चय और पातक-पुञ्जों का क्षय हो जाता है और सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्मा का सहज अनुग्रह प्राप्त होता है। किसी भी तीर्थ स्थल में उसकी परिक्रमा या वहाँ का निवास किया जाय तब अत्यन्त सात्त्विक वृत्ति, निष्ठा और पुनीत भावना युक्त रहना नितान्त अपेक्षित है। अन्य क्षेत्र में किये गये पाप-पुञ्ज तीर्थवास से शमन हो जाते हैं किन्तु तीर्थ क्षेत्र में सञ्चित पातक वज्रतुल्य हो जाते हैं।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥

अतः जो भक्त साधक तीर्थ में जब निवास करे अतीव सतर्क होकर दुरित कर्मों से दूर रहे। सदा सदाचार, सत्य पालन, सात्विक जीवन, श्रीहरिभजनपूर्वक श्रद्धायुक्त हो निवास करे। श्रीपुष्करराज में भी इन्हीं पावन नियमों का अतिदृढ़ता से पालन करता हुआ यहाँ पर निवास का व्रत ले निश्चय ही ऐसे पवित्र

साधक भक्त पर ब्रह्मदेव अतिशय प्रमुदित होंगे और अपनी मंगल कृपावृष्टि से दिव्यानन्द प्रदान करेंगे।

यद्यपि इस अत्यन्त लघुकलेवरस्वरूप संक्षिप्त पुष्कर-स्वरूप विवरण में विविध उत्तमोत्तम प्रसङ्गों का समावेश नहीं हुआ है। तथापि भावुक हृदय जिज्ञासु महानुभाव "पद्मपुराण" के पुष्कर-माहात्म्य आदि प्रसंगों को सांगोपांग अनुशीलन करें तो पुष्कर के पावन स्वरूप का भलिप्रकार परिचय हो सकेगा। प्रस्तुत आलेख में कोई प्रसंग विपरीत प्रतीत हो तो वह लेखक की ही भ्रान्ति समझें। जो शास्त्र सम्मत सानुकूल हो उसे ही ग्रहण कर अपने जीवन को कृतार्थ करें।

—युवराज श्रीश्यामशरणदेव

अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज
विरचित—

❁ श्रीपुष्करमहिमाष्टकम् ❁

ब्रह्मादिदेवैरभिसेव्यमानं सनातनं दिव्यमनोरमं च।
समग्रतीर्थेषु वरिष्ठरूपं श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि॥

ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा सेवित, नित्य, दिव्य, मनोहर और समस्त तीर्थों में अग्रगण्य तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं॥१॥

अगस्त्यवर्येण सदैव विश्वामित्रर्षिणा यत्र कृतोऽधिवासः।
श्रीवामदेवेन कृता तपस्या तत्पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि॥

जहाँ अगस्त्य ऋषि तथा विश्वामित्र ऋषि ने दीर्घकाल तक आराधना की है, वामदेव ऋषि ने जहाँ तपस्या की है, उस तीर्थ-गुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।।२।।

विरञ्चिना यत्र पुरा प्रशस्तः सम्पादितो दिव्यतमो हि यागः।
यस्य स्वरूपं परमं वरीयस्तत्पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ।।

जहाँ पहले ब्रह्मा ने प्रशस्त एवं अत्यन्त दिव्य याग किया था, जिसका स्वरूप सर्वोत्तम है, उस तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।।३।।

नागाचलाभा-परिशोभितं यत् सावित्र्यलङ्कारिविधातृ-धाम
स्वच्छाम्बुपूर्णं मकरैर्मनोज्ञं तत्पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ।।

जो नाग पर्वत की आभा से सुशोभित, सावित्रीजी से अलंकृत, विधाता (ब्रह्मा) का धाम है, स्वच्छ जल से परिपूर्ण, मगर-कच्छप आदि से सुन्दर है उस तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।।४।।

अम्भोजशोभाद्भुतकान्तिमञ्जु
मत्स्यावलीक्रीडनचञ्चलाऽम्भः ।
सुकच्छपै रम्यमनन्तधाम श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ।।

जो कमलों की शोभा व अद्भुतकान्ति से सुन्दर है, मछलियों की क्रीड़ा से जिसका जल चञ्चल हो रहा है, कछुओं से रमणीय, अनन्त धाम, तीर्थगुरु, श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।।५।।

सुधीमुखोच्चारितवेदघोषैः ऋषीश्वरैर्योगिभिरर्च्यमानम् ।
असीमरूपं प्रचुरप्रभावं श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ।।

जहाँ विद्वानों के मुख से उच्चरित वेदघोष होता है, जो ऋषीश्वरों व योगीश्वरों द्वारा पूजित, असीम रूप एवं अत्यन्त प्रभाव से अलंकृत है, उस तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।।६।।

मयूर-कीर-ध्वनितं सुतीर्थं सुसारिका-कोकिलनादहृद्यम् ।
सद्भृङ्ग-भृङ्गीकलगुञ्जितञ्च श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ।।

मयूर की केका तथा शुक की "राधाकृष्ण, गोपीकृष्ण……" आदि मधुर वाणी से ध्वनित, स्वच्छ जल से युक्त, सारिका से कूजित एवं कोयल की कुहू-कुहू की ध्वनि से मनोहर, भृङ्ग व भृङ्गी के मनोरम गुञ्जन से गुञ्जित, तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।।७।।

यत्क्षेत्रमध्ये शुभतीर्थपुञ्जे निम्बार्कतीर्थं खलु राजते च ।
नानाद्रुमैः सुप्लवगैः सुरम्यं तं पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ।।

जिस पुष्कर क्षेत्र में पिप्पलाद आदि अनेक तीर्थ हैं, जहाँ श्रीनिम्बार्कतीर्थ शोभित है (जो पद्मपुराण में वर्णित है) ऐसे अनेक वृक्षों व वानरों से सुरम्य तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।।८।।

अनन्तानन्ददं दिव्यं पुष्करमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह दिव्य "पुष्करमहिमाष्टक" नामक स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिए अनन्त आनन्द प्रदान करता है ।।९।।

श्रीपुष्कर चालीसा

दोहा—

राधा माधव पद कमल, बन्दौं बारम्बार ।
पुष्कर चालीसा लिखौं, निज मति के अनुसार ।।
जय जय पुष्करराज की, महिमा अपरम्पार ।
दरश परस मज्जन किये, होंई भवार्णव पार ।।

चौपाई—

जय जय पुष्करराज कृपाला ।
दीनबन्धु भक्तन प्रतिपाला ।।
महिमा अमित आपकी स्वामी ।
सकल तीर्थ गुरुदेव नमामी ।।
चहुँ दिशि शोभित पर्वतमाला ।
तीन कुण्ड अति परम विशाला ।।
ब्रह्म-मध्य अथ कनिष्ठ रूपा ।
पुष्कर तीन सुनाम अनूपा ।।
तीन शृङ्ग गिरि शोभित कैसे ।
ब्रह्मा—विष्णु—महेश्वर जैसे ।।
परम सुपावन पुष्कर कानन ।
कीन्हों यज्ञ जहाँ चतुरानन ।।

चहुँ दिशि घाट बने अति भारी ।
परम रम्य नयनन सुखकारी ।।
मुख्य घाट दुइ परम सुहावन ।
गो-वाराह नाम अति पावन ।।
सायं—प्रात आरती होती ।
जगमग दिव्य अनूपम जोती ।।
जो जन प्रेम से दर्शन करते ।
जन्म-जन्म के पातक टरते ।।
स्नान-ध्यान पुनि पूजन करहीं ।
निज कुल सहित भवार्णव तरहीं ।।
श्रद्धा सहित दान यहाँ दीजे ।
तीर्थ गुरु द्विज साक्षी लीजे ।।
प्रेम सहित परिकरमा देना ।
साथ हि देव दरश कर लेना ।।
ब्रह्म घाट से चलिये आगे ।
गनपति दरश विघ्न सब भागे ।।
जय नरसिंह भक्त भयहारी ।
रूप चतुर्भुज की छवि न्यारी ।।
श्री प्राचीन रंग छवि बाँकी ।
सुंदर रूप मनोहर झाँकी ।।

श्री वाराहा विष्णु भगवाना ।
दर्शन ते कटही अघ नाना ।।
राधा कृष्ण चरण अनुरागी ।
श्री श्री भीष्मदास बडभागी ।।
इनके मन्दिर हरि गुण गाना ।
करत नित्य प्रति सन्त सुजाना ।।
अट-मट महादेव छवि राजे ।
श्री नन्दीश्वर द्वारा विराजे ।।
रंगनाथ के दर्शन कीजे ।
प्रेम सहित यहाँ गोष्ठी लीजे ।।
प्रभु प्रसाद ते पाप नशावें ।
श्रुति-पुराण सब शास्त्र बतावें ।।
आगे पुनि परिकरमा भीतर ।
कृष्णगढाधिप बाई मन्दिर ।
भोग विविध लागे तरमेवा ।
है यहाँ वल्लभ-कुल की सेवा ।।
आगे नृपन की कुंज अनेका ।
एक एक ते बड़कर एका ।।
महाप्रभु की बैठक माँही ।
दिव्य स्वरूप लता तरु छांही ।।

'जय श्रीकृष्ण' कहो यह नामा ।
प्रेम सहित पुनि करो प्रनामा ।।
जय जय करणी मातु भवानी ।
महिमा किस विध जात बखानी ।
'परशुराम द्वारा' अति भाया ।
मन्दिर सुभग शिखर त्रय छाया ।
मीरा के प्रभु हिय धरि लीजे ।
गिरिधर गोपाल दर्शन कीजे ।।
आचार्य चरण की यहाँ समाधी ।
दर्शन से मिटती भव-व्याधी ।।
'जय राधे' कह आगे चलिये ।
ब्रह्मदेव के दर्शन करिये ।।
ब्रह्माजी का स्थान यहीं है ।
भारत में नहिं और कहीं है ।।
इन के दरश करें नहिं जबलौं ।
यात्रा सफल होइ नहि तबलौं ।।
जय सावित्री जय जगदम्बा ।
कृपा करहु मोपर अविलम्बा ।।
जय जय पापमोचिनी माता ।
दर्शन से सब अघ कट जाता ।।

पातालेश्वर की छवि आगे ।
करत प्रनाम दुःख सब भागे ।।
खाक चोक प्रभु दर्शन कीजे ।
सुन्दर झांकी आनंद लीजे ।।
पढ़े सुने नित यह चालीसा ।
बुद्धि विमल ह्वै बने मनीषा ।।
सात पाठ नित कार्तिक मासा ।
'सन्त' सदा पूरन अभिलासा ।।

दोहा—

पढ़ें सुने मनलाय के, भगतिमुकति के काज ।
करें पूर्ण मन कामना, निश्चय पुष्करराज ।।
प्रातः सायंकाल जो, करे प्रेम सों पाठ ।
'सन्त' सदा उस भक्त के, होंय चौगुने ठाठ ।।

।। शुभम् ।।

रचयिता—

पं० गोविन्ददास 'सन्त' 'निम्बार्कभूषण'
द्वैताद्वैतविशारद, धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ

श्रीपुष्करतीर्थ से श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ का अटूट सम्बन्ध एवं

सम्प्रदाय का आदि स्रोत पुष्कर

पुष्करक्षेत्र के अन्तर्गत श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) की अवस्थिति एक ऐतिहासिक घटना ही नहीं है सृष्टि के आदिकाल से सम्बन्धित जगत् सर्जन के गूढ़ रहस्यों एवं सम्बन्धित उनसे उत्पन्न अनेकानेक तत्त्वार्थों का आलोकात्मक प्रश्नावलियों की स्वाभाविक उत्पत्ति के समानार्थ उच्चतम आध्यात्मिक जगत् का अद्भुत आख्यान भी हैं, आज तक अव्यक्त शास्त्र विहित प्रसङ्ग भी हैं ?

ब्रह्मा के मानस पुत्र सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार ये चार सृष्टि के प्रथम महर्षि थे जिन्होंने प्रारम्भ में ही वैराग्य ले लिया। भगवच्चिन्तन और आपस में एक वक्ता और तीन श्रोता बनकर सदैव आध्यात्मिक जगत् के चिन्तन में संलग्न हुये, फलस्वरूप ऐसे-ऐसे रहस्यतम प्रश्नों के उद्घाटन करते और समाधान ढूँढ़ते विचरण करते रहे, संसार त्रिगुणात्मक है और मन भी त्रिगुणात्मक है अतः मन संसार से पृथक् कैसे होगा, आत्मा तो निर्लेप है, चलो सृष्टिकर्ता से ही इसका उत्तर पूछें, शंका समाधान करावें श्रीब्रह्माजी से। प्रश्नोत्तर देने में श्रीब्रह्माजी ने स्वयं को असमर्थ माना, ठीक उसी तरह जैसे महामुनि वशिष्ठजी को भरतजी के वचन से चित्रकूट में हुआ था। यथा—

भरत महा महिमा जबराशी, मुनि मन ठाढ़ि तीर अवलासी।
गाचह पार जतनु हिय हेत, पावति नाव न बोहिनु वेश ।।

ऐसे संकटकाल में प्रभु सर्वेश्वर का आह्वान किया, जिन्होंने हँस का रूप धारण कर उसी पुष्कर क्षेत्र में दर्शन दिये और प्रश्न को ही अस्वाभाविक दर्शाकर सनकादि ऋषियों को सन्तुष्ट किया और ज्ञान का किवाड़ खोलकर उन्हें शालिग्राम विग्रह ज्ञान प्रकाशपुञ्ज पूजन हेतु प्रदान किया जिनसे शिष्य नारद भगवान्

ऋषिराज ने प्राप्तकर स्वयं भगवान् सर्वेश्वर विग्रह को सुदर्शनचक्रावतार निम्बार्काचार्यश्री को निम्बग्राम में वैष्णवसम्प्रदाय प्रवर्तन हेतु प्रदान किया और अब वही परम्परा क्रम आज तक गुरुओं, आचार्यों द्वारा सम्पूजित होते आ रहे हैं। यह अत्यन्त ही सौभाग्य और कृपा की बात है कि वर्तमान अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज के हाथों उन्हीं सर्वेश्वर प्रभु की अर्चना–वन्दना सेवा और सर्वाधिक आराधना आज भी यथावत् हो रही है, श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज जो अब से बारहवीं पीढ़ी पूर्व ने इस क्षेत्र को पावन बनाया। आपश्री ने मुगल बादशाह शेरसाह सूरि को पुत्र प्रदान कर इस क्षेत्र की सात्विकता और महत्ता को कलियुग में अमरत्व प्रसारित किया, ब्रह्माजी से अटूट सम्बन्ध, देश का सर्वोच्च श्रीसर्वेश्वर मन्दिर, समुचित उपासना और पुष्कर क्षेत्रान्तर्गत निम्बार्कतीर्थ–सरोवर के पावन जल की महत्वपूर्ण मानसिकता जन–जन में प्रचारित हो और स्वयं पुष्कर सरोवर के दक्षिणी तट पर भव्य विशाल आधुनिक कलाविद् दक्षता तथा अनुपम लोकप्रियता से अत्यन्त सौन्दर्य का वास्तु कौशल निर्मित है और दिन प्रतिदिन विकसित हो रहा है जहाँ का विधिवत् पूजन होता है। भक्तिमती मीरां सम्पूजित श्रीगिरधरगोपाल, युगलछवि राधाकृष्ण, महादेव, सर्वेश्वर प्रभु तथा सनकादि का पूजन करते हुए सरोवर के विग्रह वैदिक स्वरूप का अक्षय भण्डार बना हुआ है।

पुष्कर एवं निम्बार्कतीर्थ की महत्ता पर इस लघु लेख में कोई निबन्ध कदापि पूर्ण नहीं हो सकता, अल्पज्ञ की लेखनी कहाँ तक समर्थ हो, अपूर्णता के लिए क्षमा प्रार्थना ही एकमात्र मार्ग सूझता है।

–रामलोचनप्रसाद
(बिहार)

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥
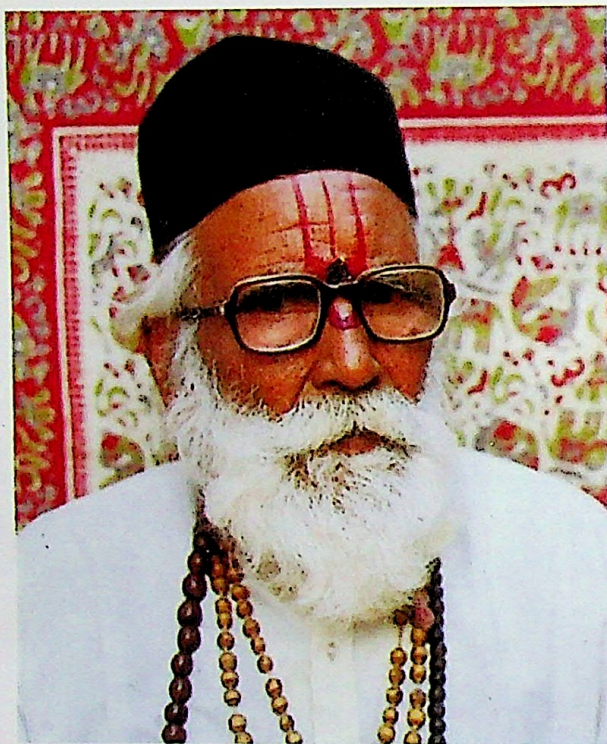
ग्रन्थ संकलनकर्ता

पं. श्री लालचन्द्र शर्मा गौड़

पुष्कर

अजमेर से ब्रह्मपुष्कर का मार्गदर्शन

श्रीपृथ्वीराज चौहान ने अजमेर शहर में और दिल्ली के राजा ने 'तारागढ़' नामक पहाड़ पर किला बनवाया। इस शहर में वैसे तो सैंकड़ों मन्दिर है परन्तु पाँच बड़े-बड़े प्रसिद्ध मन्दिर है। प्रथम मन्दिर श्रीलक्ष्मीनारायण भगवान् का पट्टीकटला में, द्वितीय मन्दिर श्रीनृसिंहजी का होलीदड़ा में, तृतीय मन्दिर श्रीचारभुजाजी का घीमण्डी में, चतुर्थ श्रीरघुनाथजी का मन्दिर घसेटी में, पंचम मन्दिर श्रीशिवपंचायतन का मेगजीन में है। यह सभी देवालय बहुत ही प्राचीन है तथा इन सभी मन्दिरों की अपनी-अपनी महिमा है।

अजमेर रेल्वे स्टेशन के पास घंटाघर, इसके पीछे श्रीबालाजी का मन्दिर, मदार गेट के पास श्रीहनुमानजी महाराज का मन्दिर है। यहाँ से रास्ता गांधी-भवन, ख्वाजा साहब की दरगाह, श्रीअर्द्ध–चन्द्रेश्वर महादेव ऊपर श्रीझरणेश्वर महादेव व ढ़ाईदिन का झौंपड़ा के दर्शन करते हुए रेल्वे स्टेशन को पहुँचे।

अजमेर रेल्वे स्टेशन से ही श्रीब्रह्मपुष्कर को जाने के लिए टेक्सी, बसें मिलती है। यहाँ से १३ किलोमीटर पश्चिम दिशा की ओर अरण्य (वन) में हिन्दुओं के तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ, सभी तीर्थों का (राजा) गुरु "श्रीब्रह्मपुष्करराज" स्थित है। यह स्थान प्राकृतिक दृष्टि से ही बड़ा शोभनीय है। इसके चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ है जिससे यहाँ पर सदा–सर्वदा हरियाली बनी रहती है। यह पहाड़ "नाग–पहाड़" के नाम से विख्यात है वैसे तो यह अरावली-पहाड़ की पर्वत श्रेणियाँ है अपितु पुष्कर के चारों ओर यह पर्वत श्रेणियाँ इस प्रकार से फैली है जैसे कि इंजिनियर ने नक्शा बनाकर इन्हें स्थित किया हो। इस प्रकार

यह स्थान दर्शनीय है। अजमेर से रास्ता पैदल व बस दोनों का ही है। मार्ग में यात्रियों के ठहरने हेतु सुविधाजनक धर्मशालाएँ व गैस्ट हाऊस बने हुए है। रास्ते में बड़ा पोस्टऑफिस, पुलिस स्टेशन तथा अ० भा० जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क-तीर्थ (सलेमाबाद) का सुविख्यात श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभजी का मन्दिर (श्रीनिम्बार्ककोट), चौराहे से दिल्ली मार्ग यहाँ से पश्चिम दिशा की ओर पुष्कर जाने का रास्ता अयोध्यापुरी (सोनीजी की नसियां) होता हुआ है। यहीं पर 'दौलत-बाग' नवीन सुभाष-उद्यान, श्रीहनुमान मन्दिर व श्रीशिव मन्दिर भी है। यहाँ पर एक कुआँ भी है जिसे 'दूधिया-कुआ' के नाम से जाना जाता है।

यहाँ एक 'जनकपुरी' है यहीं से 'श्रीपुष्करराज' की सड़क जाती है, रास्ते में पाबूगढ़, पीरसाहब, आनासागर झील से चौथमाता का मन्दिर, श्रीहनुमान मन्दिर, श्रीजगदीश मन्दिर, दयानन्द ऋषि-उद्यान, गो-शाला के पास से होते हुए श्रीहनुमान मन्दिर, आदि गौड़ विप्रों का श्रीरंगनाथ मन्दिर, नवग्रहों की बगीची से नागफणी होता हुआ पुलिस चौकी से दाहिने हाथ का रास्ता "ब्रह्म–पुष्कर" को जाता है।

पुष्कर रोड़ पर महावीर कालोनी, श्रीवेदान्त केशरी आश्रम, उर्स व पुष्कर मेला यात्री विश्राम स्थल, क्षेत्रीय महाविद्यालय (रीजनल कालेज) आगे 'नोसर' गांव आता है।

यहीं से सड़क पहाड़ी (घाटी) के ऊपर आगे पुष्कर की ओर बढ़ती है। सर्वप्रथम प्राचीन व विख्यात सिद्ध शक्ति पीठ श्री-नौशेरा-माता का मन्दिर, आगे श्रीहनुमानजी का मन्दिर पहाड़ी की ऊँचाई पर स्थित है। दक्षिण दिशा की ओर अजमेर के राजा श्रीपृथ्वीराज चौहान का बनाया हुआ 'श्रीलक्ष्मीपोल' नामक

स्थान है। वसे इस पहाड़ में अनेक स्थान व साधु–सन्तों की गुफाएँ भी है। इन स्थानों के दर्शन हेतु पैदल ही पहुँचना होता है यह सड़क घाटी से नीचे उतरती है आगे दाहिने हाथ की तरफ से "बूढ़ा–पुष्कर" की सड़क अलग हो जाती है। श्रीब्रह्म-पुष्कर के रास्ते में श्रीहनुमान मन्दिर, श्रीशिव मन्दिर, श्रीलीलाधारी भगवान् राधाकृष्ण का मन्दिर है। इसी नाम से इस गांव का नाम 'लीलासेवड़ी' कहा जाता है यहाँ एक दूधाधारी सन्त-पुरुष का स्थान भी है। आगे 'पांडु बेरी' पञ्च कुण्ड का पैदल रास्ता जाता है और बीच में कपिल मुनि का व 'घड़ुम्बा' नामक स्थान है यहाँ से एक कि. मी. की दूरी पर चुंगी-चौकी है यहीं से श्री पुष्करराज को सीधा मार्ग जाता है—मार्ग में बागड़ परिवार का बगीचा, प्राचीन गायत्री माता का मन्दिर व गोशाला, श्रीदश-नाम सन्यासाश्रम, श्रीरामद्वारा, श्रीगांधी उद्यान, नवखण्डी श्री रामसखा मन्दिर, यहाँ से बांया मार्ग पुष्कर को, दाहिना मार्ग आगे मेड़तासिटी, नागौर मारवाड़ की ओर जाता है। यहाँ पर अनेक साधु–सन्तों के आश्रम बने हैं जहाँ वे नित्य अपना पूजन–भजन करते हैं। दाहिने हाथ के रास्ते पर श्रीरणछोड़दास बाबा का भव्य स्थान 'रामधाम' के नाम से निर्मित है। सन्त टेऊँराम आश्रम भी यहीं पर स्थित है। आगे श्रीपुष्करराज का बस स्टेशन है यहाँ प्राचीन दो श्रीहनुमानगढ़ी, गायत्री मन्दिर, गायत्री शक्ति-पीठ मन्दिर, पुलिस चौकी व सिक्खों का गुरुद्वारा अष्ट भू बैकुण्ठ मन्दिर एवं कई धर्मशालाएँ बनी हुई है।

यहाँ से पूर्व को पञ्चकुण्ड मार्ग व दक्षिण की ओर नागा बाबा जज अर्जुनदासजी का आश्रम, बालमुकुन्द आश्रम व कई नर्सरियां एवं कई बाग-बगीचे व सन्त पुरुषों के समाधि स्थल, साधु–सन्तों के आश्रम बने हुए हैं। इस प्रकार से यह स्थान बहुत

ही रमणीय व दर्शनीय है। बस स्टेशन से दक्षिण दिशा की ओर से एक मार्ग श्मशान स्थल होता हुआ 'परिक्रमा' को जाता है जो कि श्रीपुष्करराज की परिक्रमा कहलाती है।

इस शहर में अनेकों धर्मशालाएँ व अनेक मन्दिर बने हैं जैसे—छीपा समाज का नामदेव विट्ठल मन्दिर, चांदमल मोदी ब्यावर वाले का 'राजकीय आयुर्वेदिक अस्पताल', स्व० सेठ श्री बद्रीलालजी की 'टकसाली धर्मशाला', उस्ताद श्रीनारायणलाल की 'व्यायाम शाला—धर्मशाला व श्रीहनुमान मन्दिर, सरकारी टूरिस्ट बंगला, बांगड़ सेठ का श्रीरमा वैकुण्ठ मन्दिर के परम मनोहर दर्शन करते हुए श्रीकृष्ण धर्मशाला के पास से पश्चिम दिशा में श्रीपुष्करराज की परिक्रमा का एक मार्ग और जाता है।

यात्रियों की सुविधार्थ—सूर्य धर्मशाला, श्रियाजी की धर्मशाला पास ही श्रीगोवर्धननाथजी का मन्दिर, कुमावतों का श्री सत्यनारायण मन्दिर, लखारों का मन्दिर, श्रीदेवनारायण गुर्जरों का मन्दिर, नागर-धाकड़ मन्दिर, नगर सुधार कमेटी द्वारा निर्मित सुलभ काम्पलैक्स होते हुए मुख्य चौक 'वराह घाट' में पधार कर परम पवित्र तीर्थराज श्रीपुष्करराज के शुद्ध व निर्मल सरोवर में शुद्ध मन से स्नान करके अपने पूर्व पाप कृत्यों से निवृत्त होकर आगे के कार्यक्रमानुसार पंचकोसीय, सप्तकोसीय, चौबीस-कोसीय व चौरासी कोसीय परिक्रमा करने हेतु अपने मन को सुनिश्चित करें। शास्त्रकारों के मतानुसार "यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवतु तादृशी" के अनुसार अपनी भावना शुद्ध रखकर ही आगे की यात्रा करना निश्चित करें।

❀ परिक्रमा की महिमा ❀

परिक्रमा का महत्व वैदिक काल से ही अक्षुण्ण चला आरहा है। शुक्ल यजुर्वेद संहिता में वर्णन आता है—"ये तीर्थानि प्रचरन्तिसृकाहस्ता निषङ्गिण तेषां सहस्रयोजनेबधन्वानितन्मसि" इसीलिए सभी देवालयों में परिक्रमा होती है। परिक्रमा का विस्तृत वर्णन सभी धर्म ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। इसी प्रकार से तीर्थ स्थानों की भी परिक्रमा का बड़ा भारी महत्व समझा गया है।

श्रीगजानन्दजी महाराज ने तो अपने माता-पिता श्रीउमा-महेश्वर की परिक्रमा करके ही तो सभी देवताओं में अग्रपूज्य हो गये हैं। परिक्रमा करने से अनेक प्रकार के रोग, कष्ट, बाधाएँ दूर हो जाते हैं। अपने इष्टदेव की नित्य नियम से परिक्रमा करने से मनुष्य अपने जीवनकाल में सभी प्रकार की कामनाओं को सफल कर सकता है। श्रीभागवत कथा श्रवण, दिव्य देश मन्दिर दर्शन, तीर्थ सरोवर में स्नान, गुरुजनों, महापुरुषों, पूज्य माता-पिता की परिक्रमा करने से भी मनुष्य अपनी मनोकामनाओं को सफल कर सकता है।

शास्त्रकारों ने लिखा भी है कि—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि-तानि प्रणयन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे ॥

हमारे अनेक जन्म-जन्मान्तरों के पाप भी परिक्रमा करने से नष्ट हो जाते हैं। परिक्रमा करते समय अपने इष्टदेव का जप, श्रीहरिनाम संकीतन करना चाहिए जिससे हमें परिक्रमा का पूरा-पूरा लाभ प्राप्त हो सके। परिक्रमा के समय इधर-उधर की

गप्पें, असत्य वचन, किसी की निंदा आदि नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। अस्तु।

वयोवृद्ध पंडित श्रीलालचन्द करीठ (श्रीलाल महाराज) पुष्कर निवासी ने पिछले ५० वर्षों से श्रीब्रह्मपुष्करराज की पंच-कोसीय, सप्तकोसीय, चौबीस कोसीय व चौरासी कोसीय परिक्रमा करवाने में यात्रियों को मार्गदर्शन करते आ रहे हैं। आप निःस्वार्थ सेवाभावी, परिश्रमी, परोपकारी भावों में विशेष रुचि रखते हैं। आपके साथ भाई–बन्धु, माताएँ–बहिने, बहुएँ छोटे–बड़े सभी निःसंकोच भाव से उपरोक्त परिक्रमा कार्यक्रम में साथ हो जाते हैं। जो भी माताएँ–बहिने परिक्रमा में इनके साथ गई थी वे सभी श्रीलाल महाराज की मुक्तकंठ से भूरि-भूरि प्रशंसा करती थी। श्रीलाल महाराज के स्वभाव हेतु कई माताओं से सुना गया कि—

"ना काहू से दोस्ती और ना काहू से बैर"

इसी भावना को देखकर सभी वर्ग के छोटे-बड़े, बूढ़े इनके साथ हो जाते हैं और ये भी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहते हुए सभी समुदाय के वर्गों को साथ लेकर चलते हैं।

श्रीलाल महाराज की सत्प्रेरणा से ही इस परिक्रमा वर्णन को संकलित करने का प्रयास किया गया है जो कि सभी धर्म-प्रेमियों, तीर्थ प्रेमियों व अन्य यात्रियों को इससे पूरा-पूरा लाभ मिले, तभी हमारा यह प्रयास सफल समझा जायेगा।

पंचकोसीय यात्रा विवरण

प्रथम दिवसीय यात्रा—

श्रीब्रह्मपुष्कर की पंचकोसीय यात्रा दो दिन में पूर्ण करने का विधान है। यात्री को सर्वप्रथम श्रीब्रह्मपुष्कर के स्वच्छ,

पवित्र व निर्मल सरोवर में संकल्पयुक्त पण्डा से आज्ञा लेकर स्नान करना चाहिए। स्नान करके श्रीवराह भगवान् के दर्शन करते हुए श्रीनीलकण्ठ महादेव, श्रीअटमटेश्वर महादेव, श्रीगुप्तेश्वर महादेव, श्रीभूतेश्वर महादेव के दर्शन करें। आगे रामानुज सम्प्रदाय का श्रीरंगनाथ मन्दिर व बल्लभ सम्प्रदाय का श्रीबिहारीजी (बाईजी) के मन्दिर के दर्शन करके परिक्रमा मार्ग में आगे बढ़ें। जयपुर घाट (टूरिस्ट बंगला), जोधपुर घाट, बंगला घाट, कोटा घाट होते हुए उत्तर मुखी श्रीहनुमानजी के दर्शन, श्रीछुतरनाथ भैरूजी (बावन भैंरू) के दर्शन करें रास्ते में सभी मन्दिरों के दर्शन करते हुए परमपिता श्रीब्रह्माजी महाराज के मन्दिर में दर्शन करें।

वहाँ से पशुमेला स्थल में श्रीकपालेश्वर महादेव के दर्शन करते हुए बस स्टेशन पर पहुँचे। यहाँ से बसें मारवाड़ मेड़ता, जोधपुर, बीकानेर, नागौर की ओर जाती है इसलिए इसे मारवाड़ बस स्टेशन कहते हैं। स्टेशन के पास ही पापमोचिनी माता, कालिका माता व हनुमान बावड़ी के दर्शन करके 'टाट बाबा का स्थान, डा० बाघ का अस्पताल, सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल के पास से सड़क सीधी 'श्रीगणेश कुण्ड' (भटबाय) पहुँचकर श्रीगणेशजी महाराज के बावड़ी में दर्शन, पूजन करें। वहाँ से मध्यपुष्कर में स्नान करते हुए गया कुण्ड (शुद्धाबाय) में स्नान, दर्शन करके आगे वृद्ध पुष्कर में स्नान करें और अन्य मन्दिरों के दर्शन करके प्रथम दिवस की यात्रा का रात्रि विश्राम करें एवं सभी यात्री मिल बैठकर सत्संग, भजन, संकीर्तन करें। यह सड़क मास्टर साहब सराधना निवासी श्रीश्रीकृष्णजी ईनाणी ने अपने अथक परिश्रम व सच्ची लगन से राजकीय स्वीकृति व सहायता से बनवाई थी जो कि आने वाले समय में यात्रियों को परेशानी

का सामना न करना पड़े। इसीलिए क्षेत्रीय निवासी इस मार्ग को 'ईनाणी रोड़' के नाम से पुकारते हैं।

द्वितीय दिवसीय यात्रा—

ब्रह्म मुहूर्त में श्रीवृद्ध पुष्कर में स्नान–पूजन करके ग्राम लीलासेवड़ी में पहुँचकर वहाँ पर 'श्रीलालविहारी–राधामाधव' के दर्शन करें। मार्ग में पाण्डेश्वर महादेव, श्रीकपिलेश्वर महादेव, कपिल मुनि का आश्रम, वन विभाग की नर्सरी (सरकारी बाग) होते हुए 'गोमुख' नामक स्थान पर पहुँचकर श्रीभीमादेवी के दर्शन करके आगे पाण्डवों की तपोभूमि 'पंचकुण्ड' नामक स्थान पर पहुँचकर स्नान-ध्यान करें। वहाँ से आगे पहाड़ी के किनारे किनारे होते हुए 'जमदग्नि कुण्ड' नामक स्थान पर पहुँच कर स्नान करके श्रीबालाजी महाराज व नागा बाबा के दर्शन करके नीचे उतरकर देवरानी–जेठानी की बावड़ी, श्रीपुष्करणी, श्री शिवानन्दजी महाराज का आश्रम देखकर श्रीबामदेवजी की गुफा देखें। वहाँ से 'गाध–बाय' नारोल, श्रीविश्वामित्र आश्रम, आमों की बेरी, बंगाली आश्रम आदि के दर्शन करते हुए साधु-सन्तों को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देते हुए श्रीअगस्त मुनि के आश्रम में पहुँचे। आगे "श्रीराम झरोखा" के दर्शन कर श्रीशक्ति-पीठ पुरुहोता देवी, चामुण्डा देवी के दर्शन करते हुए श्रीछुतर-नाथ भैंरू (बावन भैंरू) के दर्शन करते हुए परिक्रमा मार्ग में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक, अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) का सुप्रसिद्ध अतिप्राचीन 'श्रीपरशु-रामद्वारा' में परम भक्तिमती मीरां बाई के संसेव्य भगवान् श्रीगिरिधरगोपालजी के अतिशय मनोरम दर्शन करके श्रीब्रह्मघाट या श्रीयज्ञघाट में स्नान करें, वहीं से सावित्री माता का ध्यान करें आगे श्रीबद्रीनारायण भगवान् के दर्शन; श्रीरंगनाथ वेणुगोपाल

भगवान् का दर्शन करके 'श्रीगऊ घाट' आ जावें। आगे आकर श्रीरामलक्ष्मण मन्दिर में दर्शन कर श्रीवराह घाट पहुँच जावें। इस प्रकार जहाँ से परिक्रमा प्रारम्भ की गई थी वहीं आकर उसे पूर्ण सफल करें। श्रीवराह घाट में शुद्ध चित्त से स्नान, ध्यान करके अपने पण्डा तीर्थ पुरोहित को दान-दक्षिणा देकर उन्हें प्रसन्न करके अपनी यात्रा को सफल बनावें।

सप्तकोसीय परिक्रमा मार्गदर्शन

सप्तकोसीय यात्रा में कुछ स्थान देखने हेतु और अधिक बढ़ जाते हैं अतः यात्रियों की सुविधार्थ बढ़े हुए स्थानों का ही यहाँ विवरण दिया जा रहा है शेष पंचकोसीय यात्रा के समान ही है—यथा

श्रीब्रह्म पुष्करराज में स्नान करके सभी मन्दिरों के दर्शन करते हुए श्रीब्रह्माजी महाराज के मन्दिर में पहुँचकर वहाँ से पशुमेला स्थल में 'श्रीकपालेश्वर महादेव' के दर्शन करके गनाहेड़ा ग्राम में 'ध्रुव-बावड़ी' में स्नान करके देवनगर रोड़ से मध्य-पुष्कर व श्रीवृद्ध पुष्कर में स्नान-ध्यान करके प्रथम रात्रि विश्राम यहीं पर करें।

द्वितीय दिवस की यात्रा—

प्रातःकाल श्रीवृद्ध पुष्कर में स्नान करके वहाँ से लीला-सेवड़ी ग्राम में पहुँचें। पंचकोसीय परिक्रमानुसार मार्ग के सभी देवालयों के दर्शन करते हुए 'श्रीलक्ष्मीपोल' नामक स्थान का दर्शन कर 'श्रीअगस्त मुनि की गुफा', 'श्रीभर्तृहरि की गुफा', 'अधर-शिला' के दर्शन करके मोतीसर नामक ग्राम में पहुँचे। यहाँ के 'मुक्तिसर' नामक सरोवर में स्नान कर, मोती या चाँदी

का दान ब्राह्मणों को देना शुभ व श्रेयस्कर बताया गया है। द्वितीय दिवस का रात्रि विश्राम कृपया इसी ग्राम में करें।

तृतीय दिवस की यात्रा—

तृतीय दिवस प्रातःकाल 'मुक्तिसर' सरोवर में स्नान, ध्यान करके पूर्व दिशा की ओर 'श्रीब्रह्म-पुष्कर' पधार कर मुख्य वराह घाट में शुद्ध चित्त होकर निर्मल, परम पवित्र व स्वच्छ सरोवर में स्नान कर यथा शक्ति पुरोहितों, ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देकर अपनी सप्तकोसीय यात्रा को सफल बनावें।

चौबीस कोसीय परिक्रमा विवरण

ॐ स्वच्छं चन्द्रावदातं करिकरमकरक्षोभसजातफेनं
ब्रह्मोद्गीतं प्रसक्तैव्रतनियमरतैः सेवितं विप्रमुख्यैः ॥
ॐङ्कारोलङ्कृतेन त्रिभुवनगुरूणां ब्रह्मणां दृष्टिपूतम्।
संभोगाभोगरम्यं जलमशुभहरं पौष्करं मां पुनातु ॥१॥

चौबीस कोसीय परिक्रमा करने वाले सज्जनों को सर्वप्रथम विधि विधानानुसार अपने पंडे (पुरोहित) से संकलपयुक्त श्रीब्रह्म-पुष्कर में शुद्ध चित्त से स्नान कर, पवित्र वस्त्र धारण कर, श्रीहरिनाम सकीर्तन करते हुए, श्रीवराह भगवान् के दर्शन, पूजन करके, पैड़ी पर बैठकर चौबीस कोसीय परिक्रमा की अनुमति लेवे। तत्पश्चात् यात्रा निर्विघ्नता पूर्वक सफल हो इस हेतु देवों में अग्र-पूज्य श्रीगजानन्दजी महाराज का ध्यान करे—

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं,
रक्ताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्वलकान्ति-कान्तं
विघ्नेश्वरं सकल विघ्नहरं नमामि॥

अपने इष्ट देवता, कुल देवता, ग्राम देवता, स्थान देवता सभी का मन में स्मरण करते हुए आगे चौक में श्रीरघुनाथजी महाराज के, श्रीबद्रीनारायण, श्रीगोपालजी का मन्दिर के, श्रीजगदीश मन्दिर के, एवं वरद हस्त सिद्ध गणपति भगवान् के दर्शन करके यहीं से परिक्रमा प्रारम्भ करें। आगे श्रीअटमटेश्वर महादेव, श्रीरमावैकुण्ठ मन्दिर, श्रीविहारीजी (वाईजी) के मन्दिर में दर्शन कर, जोधपुर घाट (महादेव) का दुलीचा, नाथों का, भुणाजी का मन्दिर, श्रीवल्लभकुल के महाप्रभुजी की वैठक के दर्शन करते हुए जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज का स्थान—श्रीपरशुरामद्वारा में भक्तिमती श्रीमीरां बाई के आराध्य भगवान् श्रीगिरधरगोपालजी, सुदर्शनचक्रावतार भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य श्री तथा आचार्यवर्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के दर्शन करके श्रीब्रह्म-घाट में आचमन स्नान करें। बड़ा गणेशजी के दर्शन कर, खाक-चौक में वनखण्डी बाबा के स्थान पर श्रीनृसिंहजी भगवान् के दर्शन करते हुए श्रीब्रह्माजी महाराज के मन्दिर में दर्शन करें, यहीं से श्रीसावित्रीजी माता, श्रीसंतोषी माता को ध्यान नमस्कार करें। यात्रियों की सुविधार्थ यहाँ जाट व गुर्जर जाति की बड़ी धर्मशालाएँ बनी है।

प्रथम दिवसीय यात्रा वर्णन—

श्रीब्रह्मा मन्दिर से पश्चिम दिशा में श्रीकपालेश्वर-महादेव के दर्शन करके श्रीहरिनाम संकीर्तन करते हुए नन्दा, प्राची, सरस्वतो के पवित्र संगम की ओर बढ़ें। रास्ते में श्रीकन्हैयालालजी के मन्दिर पहुँचकर, वहाँ क्षीर-सागर नामक बावड़ो में स्नान करें। इस स्थान पर काँसी या पीतल की कटौरी में दूध, चावल शक्कर भर कर ब्राह्मण को दान देने से अपना मनोरथ पूर्ण होता है।

यह सत्य घटना करीब २५० वर्ष पुरानी है कि क्षीरसागर से पास ही क्षत्रिय (राजपूत) जाति का एक गाँव सूरजकुण्ड बसा हुआ था। श्रीकन्हैयालालजी के मन्दिर में एक सन्त-साधु रहते थे जो श्रीकृष्ण भगवान् के परम उपासक थे। क्षत्रियों में किसी पुरुष की मृत्यु हो गई थी। मन्दिर के पास ही उन लोगों का श्मशान स्थल था। क्षत्रिय लोगों ने चिता लगाकर शव का अग्नि-दाह शुरू कर दिया था, इतने में वह गन्दा धुआँ मन्दिर प्राङ्गण में फैल गया और उस धुएँ से बड़ी दुर्गन्ध आने लगी, साधु महाराज ने देखा और उन क्षत्रिय लोगों से कहा कि तुम लोग मन्दिर के पास ही शव-दाह संस्कार करते हो, यह अच्छी बात नहीं है, इससे देवालय परिसर का पर्यावरण दूषित होता है अतः आप लोग यह श्मशान स्थल कहीं और बना लें। बाबाजी की बात क्षत्रिय लोगों को बुरी लगी, उनमें से दो चार ने कहा—तुम बड़े अजीब बाबाजी कहाँ से आये हो ? अधिक बकवास की तो इस शव के साथ ही तुम्हें भी जला डालेंगे। बाबाजी क्षत्रियों की इस ललकार को सुनकर मन ही मन अभिशाप देते हुए कुपित हो गये और मन्दिर में चले गये। क्षत्रिय दाह संस्कार कर गाँव में पहुँचे तो दूसरा शव तैयार मिला, इसका दाह संस्कार किया तो तीसरा शव तैयार, इस प्रकार शव दाह संस्कार की यह क्रिया तीन दिन तक चलती रही। गाँव भर में दहशत फैल गयी कि—क्या पता किस समय में हमारा भी नम्बर आ जाये। इस प्रकार किसी वृद्ध का ध्यान बाबाजी की बातों पर गया और उसने सभी ग्रामवासियों को समझाया कि यह चमत्कार तो हो न हो उन बाबाजी का ही है अतः हम सभी भाई बन्धुओं को साथ चलकर बाबाजी से क्षमा माँगनी चाहिए।

प्रातःकाल ही सभी ग्रामवासियों ने मिलकर बाबाजी से क्षमा माँगते हुए कहा कि महाराज हमारे श्मशान यहाँ से हटाकर

हम मन्दिर से दूर ले जारहें हैं अतः आप हम लोगों पर दया-दृष्टि रक्खें। तभी से गाँव में शान्ति हो गई और मन्दिर की मान-मर्यादा भी बनी रही।! यह स्थान परम मनोहर व शोभनीय, दर्शनीय है। प्रथम दिन की यात्रा का रात्रि विश्राम क्षीर-सागर (कानवाय) में ही होता है।

द्वितीय दिवसीय यात्रा विवरण—

क्षीर सागर के आगे एक छोटी पहाड़ी है जिसे रोहित नाम से जाना जाता है। 'पद्म पुराण' के अन्तर्गत लेख है कि उस पहाड़ी पर 'च्यवन ऋषि' तपस्या करते थे, वे श्रीभुवन-भास्कर सूर्य-भगवान् के परम उपासक थे, उनकी धूनी, चिमटा व त्रिशूल के निशान उस पहाड़ी में आज भी विद्यमान है, पहाड़ी के नीचे एक कुण्ड बना है उसी का नाम 'सूरज कुण्ड' है, कुण्ड तो अब ध्वस्त हो गया हैं लेकिन अब भी बारह मास उस स्थान पर पानी उपलब्ध रहता है।

इसी अरण्य (वन) में बहुत सारे कल्पवृक्ष लगे थे और घना जंगल था। एक समय प्रभंजन नाम का राजा पूर्व दिशा से शिकार खेलता-खेलता इस अरण्य में आ पहुँचा। देखते-देखते उसने कई हरिणियों का शिकार कर डाला, उसमें एक हरिणी ऐसी थी जो अपने बच्चों को दुग्ध-पान करवा रही थी, उस हरिणी ने राजा को शाप दिया और कहा कि हे निर्दयी राजा तुमने मेरे छोटे-छोटे बच्चों पर भी दया नहीं की है अतः तुम्हें अब सिंह योनी प्राप्त हो और इसी पहाड़ी की गुप्त कन्दराओं में रह कर अपना जीवन निर्वाह करना। इस प्रकार का शाप प्राप्त करके राजा को बहुत ही पश्चात्ताप हुआ तो राजा ने हरिणी से शाप मोचन का उपाय पूछा। हरिणी ने कहा इसी वन में कल्पवृक्षों की सघन छाया में बैठी हुई नन्दिनी नाम की गो-माता

से वार्तालाप होने पर ही यह तुम्हारा शाप मोचन होगा और तुम पुन: राजा की योनी में आ जाओगे ।

नन्दिनी नाम की गाय के स्तनों से दुग्ध-धारा सरस्वती की धारा में मिलान होकर त्रिवेणी संगम के नाम से पँच स्रोता सरस्वती हो जायेगी यह सरस्वती नदी सिद्धपुर होती हुई, प्रयाग में जाकर गंगा, यमुना में मिल जायेगी । इसी रोहित नाम की पहाड़ी के नीचे ककड़ेश्वर महादेव व मकड़ेश्वर महादेव के प्राचीन देवालय है । पहाड़ी में अभी सन् १९९० में सन्तश्री श्रीसियारामशरणदासजी महाराज ने श्रीसीतारामजी का भव्य मन्दिर निर्माण करवाया । यहीं पर बहुत ही प्राजीन एक स्तम्भ प्राप्त हुआ है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु,महेश एवं कई ऋषि, महर्षियों के चित्र खुदे हुए हैं । वहीं पर नन्दा, प्राची, सरस्वती का त्रिवेणी संगम है । यहाँ से २ कि. मी. दूरी पर नान्द नामक गाँव है इसी पहाड़ी के ऊपर श्रीनन्दराय माता का भव्य मन्दिर है, इसी के पास से २४ कोसीय परिक्रमा का मार्ग उत्तर दिशा की ओर बढ़ता है और ८४ कोसीय परिक्रमा का मार्ग पश्चिम दिशा की ओर जाता है । इसी मार्ग में आगे 'श्रीभावुनाथजी' महाराज का तप:स्थल है इन महात्माजी ने श्रीगंगा मैया को यहीं पर अपने तपोबल से बुला लिया था अत: इस स्थान को "श्रीभावुनाथजी की झाड़ी" के नाम से जाना जाता है यह स्थान भी दर्शनीय है । इसी मार्ग में "श्रीसियारामशरणदासजी महाराज" की सत्प्रेरणा से एक प्याऊ का निर्माण करवाया गया है जो कि चौबीस कोसीय परिक्रमार्थियों को लाभकारी है ।

चौरासी कोसीय यात्रा हेतु यहाँ से पश्चिम दिशा की ओर भगवान् श्रीकृष्ण में लीन भक्तिमती श्रीमीरां का जन्म स्थान 'कुड़की' नामक गाँव है यहाँ पर श्रीकुड़कीनाथ महादेव की बावड़ी

में शुद्ध चित्त से स्नान करें, श्रीमहादेवजी के दर्शन करें तथा यहाँ के सघन वट वृक्षों की छाया में बैठकर हरि स्मरण करें यहाँ चौरासी कोसीय परिक्रमा का रात्रि विश्राम भी करें।

अग्रिम दिवस यहाँ से स्नान दर्शन कर पूर्व दिशा में तीन कोस की यात्रा के बाद 'थावला' गाँव में पहुँचे यहाँ पर 'श्रीथानेश्वर महादेव' के दर्शन कर 'कचोल्या-कुण्ड' में स्नान करें। यहाँ कटोरी में शक्कर डालकर दान देने की विशेष महिमा बतायी गयो है। यहाँ पर एक श्रीशंकर भगवान् का मन्दिर बहुत हो प्राचीन है कहते हैं कि यह 'शिवलिङ्ग' किसी योगी-महात्मा द्वारा लाया गया था जिसका भव्य मन्दिर निर्माण करवाया था यहाँ पर भी दर्शन करें। आज भी उस मन्दिर के बाहर 'पुरातत्त्व-विभाग' के संरक्षण में बोर्ड लगा हुआ है।

यहाँ एक 'सती माता' की छत्री भी बनी हुई है दर्शन करें, वस्त्र चढ़ावें, नमस्कार करें आपको यहाँ बहुत शान्ति मिलेगी श्रीरघुनाथजी, श्रीनृसिंहजी के दर्शन करके द्वितीय दिवसीय रात्रि विश्राम भी यहीं करें। यात्रियों के सुविधार्थ हमने चौरासी कोसीय यात्रा का वर्णन व रात्रि विश्राम स्थल भी इसी में मार्ग-दर्शन करा दिये हैं।

तृतीय दिवसीय यात्रा वर्णन—

प्रातःकाल नित्य नैमित्तक कार्यों से निवृत्त होकर उतर-पूर्व दिशा की ओर 'श्रीभैंरूजी' महाराज के दर्शन करके बाढी-घाटी होते हुए ६ कोस की दूरी पर पूर्व दिशा में कड़ैल गांव होते हुए पंचमथा पहाड़ में श्रीहनुमानजी महाराज के दर्शन करें। यहाँ से दक्षिण दिशा में परम तपोधन श्रीलोमश-ऋषि का स्थान है जिसे 'रोजड़ी' नाम से जाना जाता है। यहाँ से पास में ही 'श्रीवैद्यनाथ सिद्धशंकर का स्वयंभू पीठ स्थान है'। जिसका पुराणों में बहुत

ही वर्णन मिलता है। प्राकृतिक दृष्टि से भी श्रीभोलेनाथ ने इस स्थान को बहुत ही सुन्दर बनाया है—चारों ओर पहाड़ियाँ हरि-भरी हो रही है पास ही श्रीशंकर भगवान् के चरणों को पखारता हुआ झरना चल रहा है। यहीं पर साधु-सन्त अलग-अलग कुटीरों में रह कर अपना जप-तप कर रहे हैं वर्ष भर में हजारों यात्री यहाँ पधार कर सिद्धशंकर की पूजा अर्चना, सहस्त्रजल धारा, ब्राह्मण-भोजन साधु-सन्त सेवा कर के अपनी पवित्र कामनाओं को पूर्ण सफल करते हैं। श्रावण व भाद्रपद मास में तो यात्रियों का तांता लगा रहता है।

किसी के यहाँ सयमानुसार कन्या का पाणिग्रहण संस्कार न हो तो यहाँ श्रीसिद्धशंकर बैद्यनाथ की पूजा-अर्चना, सहस्त्रजलधारा, नमक-चमकात्मक श्रीरुद्राष्टाध्यायी पठन कराने से कार्य में निर्विघ्न पूर्वक अविलम्ब ही सफलता प्राप्त होती है। इस प्रकार यहाँ पूजा अर्चना करके चौबीस कोसीय यात्री रात्रि विश्राम करें।

चौरासी कोसीय यात्रा यहाँ से अग्रिम दिवस दक्षिण दिशा की ओर श्रीमार्कण्डेय मुनि के आश्रम के दर्शन करते हुए 'बुंवाल माताजी' के दर्शन लाभ लेकर उत्तर-पूर्व दिशा की ओर आगे निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) गांव में पहुँचे यहाँ अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विद्यमान है जहाँ श्रीसनकादिकों के परि-सेव्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर जो शालग्राम स्वरूप गुञ्जाफल (चिरमी) अथवा चने की दाल के समान सूक्ष्मरूप में विराज-मान है। इनका वैदिक पुरुषसूक्त मन्त्रों द्वारा गोदुग्ध से प्रतिदिन प्रातः ८ बजे अभिषेक होता है तभी इनका दर्शन लाभ सुलभ हो पाता है तथा यहीं पर संस्कृत के रससिद्ध कवि श्रेष्ठ रसिकवर श्रीजयदेव के आराध्यदेव श्रीराधामाधव भगवान् विराजते हैं जिनके मनोहर दर्शन अतीव चित्ताकर्षक है। श्रीहँस भगवान्

महर्षि श्रीसनकादिक, देवर्षि श्रीनारद, श्रीनिम्बार्क भगवान् एवं श्रीनिवासाचार्यश्री इन आचार्य पञ्चायतन के साथ परम्परानुवर्ती आचार्यवृन्दों के मञ्जुल दर्शन परम आनन्दकारी है। आचार्यवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज को तपःस्थली के तथा उनके हवनकुण्ड (धूनी) चित्र स्वरूपों के मङ्गल दर्शन अतीव आह्लाद-दायक है। इन सभी के भव्यतम सुन्दर दर्शनोपरान्त जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" महाराज को साष्टांग प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त कर अपने को कृत-कृत्य समझें। यहीं पर रात्रि विश्राम श्रीहरि संकीर्तन करते हुए करें।

दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीनिम्बार्कतीर्थ–सरोवर में स्नान करें, तीर्थ का विधिपूर्वक पूजन करके तीर्थ–विप्रों को दान–दक्षिणा से सन्तुष्ट करें। यह निम्बार्कतीर्थ अत्यन्त प्राचीन है, इसका विस्तृत वर्णन "पद्मपुराण" में है। यहाँ भगवान् सूर्य ने निम्बवृक्ष पर आश्रय लिया था और कोलाहल नामक दैत्य का महाविष्णु ने प्रकट होकर संहार किया था। यहाँ श्रीसूर्यनारा-यण, श्रीशंकर भगवान् तथा श्रीहनुमानजी महाराज के सुन्दर मन्दिर का दर्शन लाभ लें। निम्बार्कतीर्थ से कुछ ही दूरी पर साभ्रमती नदो है जो वर्तमान में वर्षाकाल में प्रवाहित रहती है। इसके अतिरिक्त निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) ग्राम में अनेक मन्दिर तथा श्रीबोहरेजी की बावड़ी अति प्राचीन ऐतिहासिक है जो अत्यन्त दर्शनोय है। पूर्वाचार्यों का समाधि स्थल (पुष्प वाटिका) तथा भगवान् श्रीशंकर, श्रीगणेशजी, श्रीहनुमानजी के मन्दिर का सुन्दर दर्शन कर अग्रिम यात्रा के लिए प्रस्थान करें।

अग्रिम दिवस यहाँ से करकेड़ी ग्राम पहुँच कर श्रीगोपालजी, श्रीअष्टगोपालजी, श्रीश्यामाश्यामजी, श्रीगणेशजी के मन्दिरों के

दर्शन कर रात्रि विश्राम यहीं करें। प्रातःकाल यहाँ से पीपलाद के लिए प्रस्थान कर वहाँ पर श्रीमहादेवजी, श्रीहनुमानजी एवं श्रीचारभुजा, श्रीराधाकृष्ण आदि मन्दिरों के दर्शन करें। दूसरे दिन यहाँ से परबतसर पहुँच कर वहाँ के देव मन्दिरों के दर्शन करें एवं विश्राम यहीं करें। यहाँ से किणसरिया के लिए प्रस्थान कर किणसरिया माताजी के दर्शन करें। यहाँ से रुपनगढ़ पहुँच कर यहाँ श्रीगोपालजो, श्रीरघुनाथजी, श्रीगोकुलचन्द्रमाजी, श्री-द्वारकाधीशजी के दर्शन करें। यहाँ से रलावता के लिए प्रस्थान करें मार्ग में सुरसरा में श्रीतेजाजो के दर्शन करते हुए रलावता में श्रीहनुमानजी आदि मन्दिरों के दर्शन कर तत्पश्चात् खातोली-मोड़–मंगलरेडी पर श्रीनिम्बार्क मारुतिनन्दन के दर्शनोपरान्त मदनगंज–किशनगढ़ पहुँच कर यहाँ पर श्रीहनुमानजी, श्रीराधा-सर्वेश्वर भगवान्, श्रीराम मन्दिर, श्रीबालाजी की बगीची आदि के दर्शन कर विश्राम करें। यहाँ से खोड़ा गणेशजी के दर्शनों के लिए प्रस्थान कर दर्शन लाभ प्राप्त करें। तत्पश्चात् पीताम्बर की गाल, हाथी खान, श्रीराम मन्दिर दर्शन करते हुए विश्राम यह मार्ग किशनगढ़ से १० किलोमीटर है। रास्ते में ही श्री-बालाजी का मन्दिर वहाँ से ८ किलोमीटर। छोटा उदयपुरा की माताजी विश्राम। वहाँ से ८ किलोमीटर श्रीसिंह गणपति विश्राम स्थली यह माग माताजी से ८ किलोमीटर है रात्रि को विश्राम। यहाँ से पश्चिम दिशा में जयपुर मार्ग पर प्राचीन चोरसीयावास ग्राम के बालाजो विश्राम, आठ किलोमीटर श्री गणेशजी से वहाँ से १५ किलोमीटर अजमेर मार्ग वहाँ विश्राम यहाँ पर यहाँ से आगे का २४ कोस की यात्रा मार्ग मिलता है। जिस मार्ग में दोराई गाँव में श्रीचारभुजा के दर्शन ६ किलो-मीटर यहाँ से मांगलियावास ग्राम कल्पवृक्ष विश्राम रास्ते में

भी विश्राम कर सकते हो। अजमेर से मांगलियावास ३० किलोमीटर विश्राम वहाँ से पूर्व उत्तर में मकरडा ग्राम टंकी यह आठ किलोमीटर उत्तर में है। वहाँ पर गौरी कुण्ठ को माताजी का प्राचीन स्थान है। विश्राम यहाँ से उत्तर पूर्व ३० किलोमीटर के लगभग भाँवता ग्राम नाथथला ग्राम होते हुए विश्राम स्थली अजयपाल राजा का स्थान अजगंदेश्वर महादेव के दर्शन विश्राम वहाँ से चक्रकुण्ड के दर्शन करके उत्तर दिशा में पश्चिम दिशा में दो मार्ग है। एक मार्ग तो खरेकड़ी होता हुआ मोती सरोवर जाता है। १५ किलोमीटर। दूसरा मार्ग भाँवता होते हुए पिछोलीया ग्राम में विछाम, वहाँ से यह अजयपालजी से बोस किलोमीटर पड़ता है। पैदल का रास्ता चोहट्टी माता होते हुए पिछोलिया गाँव जाकर विश्राम। वहाँ से वाहन का रास्ता नाका होता हुआ बिजोलिया आता है। वहाँ से १५ किलोमीटर भगवानपुरा ग्राम में विश्राम। पिछोलिया में विश्राम वहाँ से १० किलोमीटर मोती सरोवर विश्राम, वहाँ से १५ किलोमीटर श्रीपुष्करराज यात्रा परिपूर्ण ८४ कोस की।

यह यात्रा पूर्ण करने पर कम से कम सात ब्राह्मण–जोड़ा को भोजन करावें और सरोवर की पेड़ी पर बैठकर पंचामृत से श्रीपुष्करराज का अभिषेक करावें जिससे मनोवांछित कामना सफल हो सके।

चौवीस कोसीय परिक्रमा शास्त्रों के मुहूर्तानुसार श्रावण सुदी तृतीया, चतुर्थी से प्रारम्भ करने का विधान है। इसी प्रकार कार्तिक या माघ माह में चौरासी कोसोय परिक्रमा प्रारम्भ करने का विधान है।

यात्री अपनी सुविधानुसार पैदल या निजी वाहन से भी यात्रा कर सकते हैं।

पुष्कर यात्रा विवरण
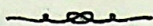
१. पुष्कर २. कानवाय ३. नन्दा, प्राची, सरस्वती
४. नांद गांव ५. गोविन्दगढ़ ६. आलनियावास
७. कुडकी ८. थाँवला ९. तिलोरा
१०. कड़ेल ११. मझेवला (डूगरया)
१२. लोमष महर्षि (रोजडी माता) १३. वैद्यनाथ
१४. मार्कण्येय मुनि आश्रम, शिव विभूति, ब्रह्म विभूति, चन्दन का पीला पहाड़, शिव विभूति, सफेद पहाड़, श्याम पहाड़।
१५. माकड़वाली १६. बँवाल १७. रामदेवरा
१८. श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) १९. करकेड़ी
२०. पीपलांद २१. परबतसर २२. किणसरिया
२३. रुपननढ़ २४. रलावता, निम्बार्क मारुति मन्दिर
२५. किशनगढ़ २६. खोड़ा गणेशजी २७. पीताम्बर की गाल
२८. छोटा उदयपुर २९. चोरासियावास ३०. दोराई गाँव
३१. माँगलियावास ३२. मकरेडा ३३. भाँवता
३४. पिछोलिया ३५. अजयपाल ३६. विजोलिया
३७. भगवानपुरा ३८. श्रीपुष्करराज।

श्रीपुष्करस्थ प्राचीन दर्शनीय स्थल

१. श्रीब्रह्माजी का मन्दिर
२. श्रीसावित्री माता (पर्वत शिखर पर)
३. श्रीपापमोचिनी माता (पर्वत शिखर पर)
४. श्रीबाराह विष्णु भगवान्
५. श्रीअटमटेश्वर महादेव
६. श्रीपञ्चकुण्ड
७. श्रीगोमुख
८. श्रीवामदेव गुफा
९. श्रीअगस्त्य गुफा
१०. श्रीवृद्ध पुष्कर
११. श्रीमध्य पुष्कर
१२. श्रीगया कुण्ड
१३. श्रीमृकण्ड आश्रम
१४. श्रीवैद्यनाथ
१५. श्रीलक्ष्मीपोल
१६. श्रीनन्दा, प्राची, सरस्वती—सङ्गम
१७. श्रीजमदग्नि ऋषि
१८. श्रीगंगा-यमुना-वापिका (बावड़ी)
१९. श्रीअजय गन्धेश्वर
२०. श्रीकालिका माता
२१. श्रीब्रह्मपुष्कर पर ब्रह्मघाट
२२. श्रीगोघाट
२३. श्रीबाराहघाट
२४. श्रीपरशुरामघाट
२५. श्रीपरशुरामद्वारा मन्दिर (यहाँ श्रीमीरांबाई के आराध्य भगवान् श्रीगिरिधरगोपाल सुशोभित हैं)
२६. श्रीरङ्गनाथ का प्रचीन मन्दिर
२७. श्रीरमावैकुण्ठ मन्दिर

त्रिविधरूपात्मक–पुष्कर परिक्रमा

१–श्रीब्रह्म पुष्कर की परिक्रमा
२–२४ कोशीय परिक्रमा
३–८४ कोशीय परिक्रमा

❀ पुष्कर का कार्तिक मासीय मेला ❀

यों तो सर्व–तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज में बारह मास उत्सव-महोत्सव होते ही रहते हैं, उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्तिक शुक्ल देवोत्थापिनी ११ एकादशी से पूर्णिमा पर्यन्त पञ्च दिवसीय महान् पर्व अत्यन्त महिमापूर्ण है। इन पाँच दिवस के मध्य समस्त भूमण्डलस्थ यावन्मात्र तीर्थ यहाँ उपस्थित रहते हैं जिसका शास्त्रीय वर्णन "पद्मपुराण" में निहित है। इस अवसर पर पुष्कर में स्नान, मार्जन, आचमन से सम्पूर्ण तीर्थों के स्नानादिक का फल यहीं प्राप्त हो जाता है जो वस्तुतः अतीव अनुपम है। इसी पवित्र पर्व पर पुष्कर का मेला भी अतिशय दर्शनीय है। लाखों–लाखों यात्री धर्माचार्यों–सन्त–महन्त–महात्माओं, महामण्डलेश्वरों, विद्वत्प्रवरों के मङ्गल दर्शन के साथ उनके पावन उपदेश, सत्सङ्ग, भगवद्गुणानुवादश्रवण, भगवन्नाम संकीर्तन, भगवद्–दर्शन, भगवल्लीलाओं का आनन्द परम सुलभ रहता है। पुष्कर के इस विराट् मेला में बैल, घोड़े, ऊँटों का समवेत–संगम अनिर्वचनीयता को लिए हुए रहता है जो अत्यन्त चित्ताकर्षक है।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज
विरचित—

❀ श्रीब्रह्मदेव-दर्शन ❀

श्रीब्रह्म पुष्कर-मही, करत सतत शुभ वास ।
सुर-मुनिजन वन्दित सदा, 'शरण' दरश की आस ।।१।।

पुष्कर पावन अवनि मध्य, किया यज्ञ सम्पन्न ।
श्रीब्रह्मा शोभित यहाँ, 'शरण' सतत प्रसन्न ।।२।।

एक रूप से ब्रह्मलोक, एक रूप भूवास ।
धाता पुष्कर-भूमि पर, 'शरण' सुखद आभास ।।३।।

आराधक को सहज ही, देते हैं वरदान ।
ऐसे स्रष्टा जगत के, 'शरण' करो उन ध्यान ।।४।।

नागपर्वत शिखर पर, विधि-सावित्री मात ।
शोभित पुष्करराज में, 'शरण' भजो नितप्रात ।।५।।

गायत्री सह ब्रह्मदेव, शोभित पुष्करराज ।
इनका वन्दन ध्यान हो, 'शरण' प्रमुख यह काज ।।६।।

श्रीब्रह्मा की जय सदा, श्रीगायत्रीमात ।
जय जय पुष्करराज की, 'शरण' जगत विख्यात ।।७।।

श्रीबाराह भगवान् के, दर्शन दिव्य महान ।
अटमटेश महादेव के, पुष्कर 'शरण' कर ध्यान ।।८।।

ब्रह्मपुष्कर और मध्य, कनिष्ठ प्रसिद्ध तीन ।
ब्रह्मदेव राजत जहाँ, 'शरण' भजो तल्लीन ।।९।।

❋ पुष्कर-आरती ❋

आरती पुष्कर की कीजै । सरस छवि नैननि भर लीजै ।

सुशोभित सुन्दर शीतल जल,
सुधा सम मीठा अति निर्मल ।
दरश से सब दुःख जाते टल ।।
स्नान से पाप सकल छीजै ।।१।। आरती०

जयति जय पुष्कर की बोलो,
सकल कलि–कल्मष तुम धोलो ।
भटकते इत उत क्यों डोलो ।।
इन्हीं की चरण शरण लीजै । आरती पुष्कर की कीजै० ।।

ध्यान नित पुष्कर का धरते,
पाप उन भक्तन के हरते ।
मगन मन कीर्तन जो करते ।।
प्रेम की वर्षा में भीजै । आरती पुष्कर की कीजै० ।।

भाव से दर्शन नित करना,
दरश कर पुष्कर भव तरना ।
'सन्त' फिर मन में क्यों डरना ।।
कृपा कर भक्ति दान दीजै । आरती पुष्कर की कीजै० ।।

रचयिता—
पं० श्रीगोविन्ददास 'सन्त'
"निम्बार्क भूषण" द्वैताद्वैत विशारद,
धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ